Multi-disciplinary International Journal

Certificate of Paper Publication

Anthology

ISSN 2456-4397

SJIF 6.018

IIJIF 4.02

RNI UPBIL/2016/68067

Indexed Google

Anthology The Research

This is to certify that the paper titled

भारतीय दर्शन और कला प्रतीक

Author	:	रेखा धीमान
Designation	:	सह- प्राध्यापक
Dept.	:	चित्रकला
College	:	शा0 हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल म०प्र०, भारत

has been published in our Peer-reviewed / Refereed International Journal

vol. 6 *issue* 1 *month* April *year* 2021

The mentioned paper is measured upto the required.

Dr Rajeev Misra (Editor/Secretary)

Dr. Ashok Kumar President

Dr. Asha Tripathi (Vice-President)

9893686473

Social Research Foundation

Non Governmental Organisation

128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011

(Cell) 0512-2600745, 9335332333, 9839074762 (E-mail) socialresearchfoundation@gmail.com (Web) www.socialresearchfoundation.com

चित्रकला Dr. Rekha Dhiman

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-1* April 2021
Anthology : The Research

भारतीय दर्शन और कला प्रतीक

Indian Philosophy and Art Symbol

Paper Submission: 01/04/2021, Date of Acceptance: 16/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

रेखा धीमान
सह– प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
शा0 हमीदिया कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय,
भोपाल, म०प्र०, भारत

सारांश

भारतीय दर्शन का विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह स्वयं में गूढ़ रहस्यों और अनगिनत संभावनाओं को समाहित किए हुए है। इन्हें कला प्रतीकों ने साकार रूप देकर और भी समृद्ध बना दिया है। इस प्रकार दर्शन और प्रतीक में गहरा संबंध दृष्टिगत होता है। जहां भारतीय दर्शन चिंतन-मनन एवं तर्क-वितर्क से संबंधित है, जिन्हें वाचिक या लिपिबद्ध किया गया है, वहीं कला का संबंध संवेदनाओं से है जो भारतीय दर्शन को मूर्त रूप प्रदान करती है। कला प्रतीक ही गागर में सागर भरने का कार्य करते हैं। इसके सशक्त उदाहरण वेदों, बौद्ध, जैन एवं हिंदू धर्म में दिखाई देते हैं। लोक कला में प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों में आध्यात्मिक एवं भौतिक रहस्यों का उद्गार किया गया है। वहीं बौद्ध धर्म पुनर्जन्म और मोक्ष की अवधारणा को लेकर अग्रसर हुआ हैं। जैन धर्म ने प्रतीकों के माध्यम से जैन दर्शन और निर्वाण की परंपरा को उजागर किया। इस प्रकार कहा जाए तो भारतीय दर्शन में कला प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

Indian philosophy has an important place in the world. It contains esoteric mysteries and innumerable possibilities. Art symbols have made them even richer by giving them real shape. In this way, a deep connection between philosophy and symbol is seen. While Indian philosophy deals with contemplation, reasoning and argumentation, which are spoken or written, art deals with sensations that gives Indian philosophy a tangible form. It is the art symbol that performs the work of filling the "Gagar me Sagar". Strong examples of this appears in the Vedas, Buddhist, Jainism and Hinduism. Symbols have an important place in folk art. Spiritual and material mysteries have been revealed in the Vedas. At the same time, Buddhism has advanced on the concept of rebirth and salvation. Jainism exposed the tradition of Jain philosophy and nirvana through symbols. Thus, art symbols have an important place in Indian philosophy.

मुख्य शब्द : निर्वाण, जातक, निगमन, वैशेषिक, मीमांसा।
Nirvana, Jataka, Nigaman, Vaisheshika, Mimansa

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन अपने आपमें गूढ़ रहस्य और संभावनाओं से ओतप्रोत हैं। भारतीय दर्शन का संबंध केवल धर्म दर्शन या वैदिक दर्शन से नहीं अपितु भारतवर्ष के किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति द्वारा किए गए चिंतन – मनन से हैं दर्शन में किसी घटना को मात्र देखना नहीं अपितु इसके पीछे-छिपे सत्य को उजागर करना होता हैं, जिसमें अंतर्दृष्टि तथा तर्क –वितर्क भी होते हैं। भारतीय दर्शन को कला साहित्य में समृद्ध किया है, ऐसा कहा जा सकता है, क्योंकि दर्शन केवल लिपिबद्ध है परंतु कला ने दर्शन को मूर्त रूप प्रदान किया, जिसके सशक्त प्रमाण चित्रों, भित्ति चित्र (अजंता, एलोरा) सांची, भरहुत, अमरावती, मथुरा, गांधार शैली के अंकन में है। भारतीय दर्शन मुख्यत: आस्तिक और नास्तिक या वैदिक और अवैदिक विचारधारा को लेकर चला है, जिसमें सांख्य, योग, न्याय , वैशेषिक, वेदांत और मीमांसा आस्तिक या वैदिक दर्शन में आते हैं वहीं जैन और बौद्ध अवैदिक दर्शन में। दोनों ही धाराएं धर्म को साथ लेकर चली हैं। कला में धर्म के साथ ही सौंदर्य भी प्रस्फुटित हुआ है। किसी भी सृजन के मूल में कल्पना या आंतरिक मनोभाव अवश्य रहे हैं, तभी किसी कृति का निर्माण हुआ है। यदि हम कला दर्शन की बात करते हैं तो इसमें सौंदर्य प्रमुख तत्व के रूप में सामने आया है जो किसी भी कृति का प्राण है। कला के क्षेत्र में रवीन्द्र

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-1* April-2021
Anthology : The Research

नाथ टैगोर भी 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की अवधारणा को लेकर चले हैं। प्रतीकों ने इस अवधारणा को और भी सशक्त और गूढ़ बना दिया है।

'सन 1936 में मार्टिन हाईडेगर ने 'द ओरिजिन ऑफ द वर्क ऑफ आर्ट' निबंध लिखा है, जिसे कला दर्शन की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक माना जाता है। हाईडेगर ने इस निबंध में दावा किया है कि कलाकृति को इस जगत में स्थित वस्तु के रूप में देखना आधुनिकता की मूलभूत लाक्षणिक त्रुटियों में से एक है। हाइडेगर के अनुसार कला तो एक नए जगत के द्वार खोलती है, कला के रूप में सत्य अपने आप में घटता नहीं हमारे अनुभव के दायरे में वस्तुओं के अस्तित्व का उद्घाटन भी करता है।'[1]

धर्म का उद्देश्य मानव कल्याण की भावना भी रही है। प्रत्येक धर्म सुख-दुख का कारण और उसका निदान बताने का प्रयास करता है। यही नहीं वह मोक्ष और निर्वाण की राह भी दिखाता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णित चार अंगों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में धर्म का स्थान सबसे बड़ा हैं। मानव सदैव से धर्म के बारे में चिन्तन करता रहा है। भारत का धर्म और दर्शन दोनों विख्यात हैं। धर्म अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कर्म को अधिक महत्व देता है, वहीं दर्शन बौद्धिक चिंतन को। दर्शन आगमन, निगमन, तर्क और प्रयोग विधि अपनाता है। धर्म में श्रद्धा और विश्वास आवश्यक हैं। दोनों का एक ही उद्देश्य है वह है **"परम–तत्व"** की खोज। भारतीय दार्शनिकों ने चिंतन-मनन के उपरांत रहस्यात्मक पहलुओं को उजागर किया, वही कलाकारों ने उन प्रतीक रूपों को सबके सामने लाकर सहज और सरल बनाया।

कलाकार सदैव से इस रहस्योद्घाटन के लिए प्रयासरत रहता है। जब कलाकार की दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतम् की ओर जाती है तो वह प्रतीक का रूप धारण कर लेती है। जब विचार करते–करते हम किसी ऐसे स्तर पर पहुँचते हैं, जहां सामान्य भाषा पद्धति हमारी अनुभूतियों को व्यक्त करने में असमर्थ रहती है, तो हम प्रतीक विधि का आश्रय लेते हैं। जुंग के अनुसार 'किसी अज्ञात वस्तु के लिए उसके भ्रम के रूप में रखी आकृति प्रतीक कहलाती है और ऐसा विश्वास किया जाता है कि उस अज्ञात वस्तु का अस्तित्व उस वस्तु में है।'

प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान समय तक अनेक प्रतीकों का प्रयोग होता आया है। आदिम अवस्था में मानव ने प्रकृति में प्राप्त रूपों मानव, पशु, पक्षी, नदी, पहाड़ को ही ज्यामितीय आकारों में देखा। किंतु जैसे-जैसे धर्म का प्रादुर्भाव हुआ मानव की वैचारिक क्षमता भी बढ़ती गई। भारतवर्ष में कला के क्षेत्र में मुख्यत: वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, एवं जैन धर्म का विशेष महत्व दिखाई देता है। अतः कलाकारों ने इन्हीं धर्मों के माध्यम से प्रतीक के रहस्यात्मक पहलुओं को उजागर किया जो निम्नानुसार हैं–

1. वैदिक प्रतीक
2. बौद्ध प्रतीक
3. जैन प्रतीक

वैदिक प्रतीक

प्राचीन काल में भारतीय दर्शन का मूल वेद माने जाते थे। इन्हें आस्तिक दर्शन भी कहा जाता था। वैदिक दर्शन छः हैं :

1. सांख्य
2. योग
3. न्याय
4. वैशेषिक
5. मीमांसा
6. वेदांत

वेद भौतिक और आध्यात्मिक रहस्यों के लिए परम तत्व की प्राप्ति है। वैदिक दर्शन के आचार्यों ने सर्वप्रथम कला में जिस प्रतीक का प्रयोग किया वह प्रस्तर की अंडाकार शालिग्राम की बटिया या मूर्ति प्रतीक है। इसे वृक्षों के नीचे रखा जाता है और आज भी इसको इसी रूप में पूजा जाता है। प्रस्तर प्रतीक ब्रह्मांड में अंडे के रूप में सबसे पहले जीवात्मा का द्योतक है। वृक्ष के रूप में डालियों और पत्तियों के फैलाव स्वयं ब्रह्मांड प्रतीक के रूप में माना जाता है । एक प्रमुख प्रतीकात्मक आकार जिसके दर्शन हमें कला के रूप में होते हैं वह है सर्प। सर्प को मृत्यु और मुक्ति का प्रतीक माना गया है। इसी प्रकार बटिया, वृक्ष और सर्प क्रमशः जीवन, प्रगति और निर्माण के द्योतक हैं।'[2]

'इसी प्रकार शिवलिंग का प्रतीकात्मक रूप जीवन और मोक्ष को दर्शाता है। ब्रह्मांड में इसे ईश्वर के रूप का प्रतीक सम–त्रिबाहू त्रिभुज माना जाता है। स्वास्तिक का रूप सृजनात्मक शक्ति व जीवन का द्योतक है, वही योग दर्शन के अनुसार ब्रह्मांड की चक्रशक्ति जिसे महाकुंडलिनी कहा गया है जो मानव शरीर में निवास करती है।'[3]

इसी प्रकार अनेकों प्राकृतिक, मानवीय, देवी तथा ज्यामितीय रूपों को चित्रकारों ने अपने चित्रों में प्रतीक रूप में स्वीकारा है जैसे अश्व को शक्ति, कबूतर को शांति और मोर को सौंदर्य का प्रतीक माना है।

बौद्धिक प्रतीक

भारत वर्ष में बौद्ध दर्शन आत्मा-परमात्मा, जन्म-पुनर्जन्म तथा मोक्ष की अवधारणा को लेकर आगे बढ़ा है। गौतम बुद्ध बुद्धत्व अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने वाली आत्माओं के प्रतीक बन गए। बौद्ध चित्रकला बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य को लेकर चली है, वही तत्कालीन चित्रकारों ने आत्म प्रशंसा त्यागकर कला के प्रमुख उद्देश्य धर्म और संस्कृति के उत्थान को स्थान दिया। चित्रकला के रूप में अजंता, एलोरा, बाघ ऐसे महामंडप है जहां बुद्ध भगवान को प्रतीक रूप में देखा जा सकता है। बौद्ध प्रतीकों के द्वारा ही चित्र, मूर्ति और स्थापत्य में भक्ति, श्रद्धा एवं प्रेम के दर्शन होते हैं। अजंता की गुफा संख्या छः में त्रिरत्न नामक चित्र अंकित है जो बुद्धम, धम्मम और संघम का प्रतीक है। 17वीं गुफा के बरामदे में अंकित चक्र त्रिशूल, जिसे भवचक्र भी कहा जाता है। इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है। एक अन्य चित्र 'सप्तपदम चिन्ह' में महामाया एक साल वृक्ष के

नीचे खड़ी हैं। ऐसा माना जाता है कि इसके पश्चात् गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। इसी प्रकार यदि बौद्ध मूर्तिकला पर दृष्टि डालें तो सांची, भरहुत, अजंता, एलोरा ऐसे कला मंडप है जहां बुद्ध की उपस्थिति को प्रतीकात्मक रूप से अंकित किया गया। यहां पर सांची, भरहुत में धरण पादुका, बोधिवृक्ष, कमलदल, स्तूप आदि के प्रतिमानों से बुद्ध की उपस्थिति दर्शायी है। जातक कथाओं के अंकन में कपि जातक, हंस जातक, छदन्त जातक, साम जातक आदि कथाएं उनके पुनर्जन्म और उससे संबंधित क्रियाकलापों से परिपूर्ण है। 'अतः हम कह सकते हैं कि भारतीय बौद्ध कला एवं उसके सृजित प्रतीकों का महत्वपूर्ण योगदान है उसने अपनी श्रेष्ठ सृजनात्मक आध्यात्मिकता से भावी कला को वासनाओं की तृप्ति का साधन नहीं बनने दिया।'[4]

जैन प्रतीक

जैन कला में प्रतीक गुहा मंदिरों, पुस्तकचित्रों एवं पटचित्रों में प्राप्त होते हैं।' जैन दर्शन उदयगिरि-खंडगिरि की विभिन्न गुफाओं में प्रतीक रूप में वर्धमंगल, स्वास्तिक, नंदिपद, चैत्यवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, सर्पयुगल, धर्मचक्र और तीर्थंकर चिन्हों का प्रयोग विपुलता से मिलता है।[5] इसके अलावा त्रिरत्न कलश, भद्रासन, मत्स्य, पुष्पमाला, अशोकवृक्ष, दुंदुभिछत्र, चमर, घण्टा, गंगा –यमुना आदि प्रतीक चिन्हों का विशेष स्थान है। यही नहीं जैन तीर्थंकरों के भी अपने प्रतीक चिन्ह जैसे भगवान ऋषभदेव-सांड, अजितनाथ-हाथी, शिवसेना, नेमिनाथ-शंखवारादत्ता, पारसनाथ-सर्प, शांतिनाथ-बकरी, धर्मनाथ-वज्र दण्ड आदि। इस प्रकार जैन दर्शन में प्रतीकों की प्रचुरता दिखाई देती है।

इसी प्रकार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोककला के रूप में प्रतीकों के दर्शन कलश, स्वास्तिक, चिड़िया, कौवा, ज्यामितीय आकार और विभिन्न रंगों के रूप में होते हैं।जिन्हें भारतीय पर्वों पर अनेक प्रतीकों के रूप में चित्रण व अंकन किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से कलादर्शन जैसे गूढ़ विषयों को प्रतीकों के माध्यम से सरल और समझने योग्य बनाना है। यही प्रतीक गागर में सागर भरने की सामर्थ्य रखते हैं। प्रत्येक धर्म को अग्रसर करने में भी सहायक रहे हैं।

निष्कर्ष

भारतीय कला और दर्शन दोनों ने ही विश्व में अपना स्थान बनाया है। मनीषियों का ध्यान चिंतन–मनन अध्ययन और कर्म रहा है। भारतीय कला दर्शन को कलाकार चित्र प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करने की चेष्टा में सफल रहा है। यही प्रतीक दर्शन के प्राण हैं और गागर में सागर भरने का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://hi.m.wikipedia.org
2. भारतीय दर्शन– डॉ शोभा निगम मोतीलाल बनारसीदास– दिल्ली P–7
3. कला सौंदर्य और जीवन – प्रोफेसर रणवीर सक्सेना – रेखा प्रकाशन देहरादून P–366–367
4. भारतीय चित्रकार और उनकी आध्यात्मिक चित्रकला – सम्मेलन पत्रिका P-157
5. https://jain puja.com
6. https://jainpuja.com

वैदिक प्रतीक

चित्र– बौद्ध प्रतीक

जैन प्रतीक

ISSN: 0975-4520
Vol-24 No. 04 October-December2021

EFFECTS OF SOCIAL ISOLATION ON QUALITY OF LIFE AND GENERAL WELL BEING IN YOUNG ADULTS DURING COVID 19 PANDEMIC

Dr. Shahin Ghani
Assistant Professor, Deptt. of Psychology
Govt. Hamidia Arts and Commerce College, Bhopal, M.P.

Abstract :

The COVID-19 pandemic has led to implementation of unprecedented "social distancing" strategies crucial to limiting the spread of the virus. In addition to quarantine and isolation procedures for those who have been exposed to or infected with COVID-19, social distancing has been enforced amongst the general population to reduce the transmission of COVID-19.

The risk of COVID-19 infection is greater for young adults over the age of 16-25 years who are at a heightened risk of severe illness, hospitalization, intensive care unit admission, and death (US CDC, 2020). According to the Centre for Evidence-Based Medicine, the case fatality rate (CFR) is about 4% for patients over 16-25 years old, 8% for patients over age 70 years, and approximately 15% for patients over the age of 80 (Oxford COVID-19 Evidence Service, 2020). This compares with CFR of 0.0026%–0.3% in those under age 45.

However, there is a high cost associated with the essential quarantine and social distancing interventions for COVID-19, especially in young adults, who have experienced an acute, severe sense of social isolation and loneliness with potentially serious mental and physical health consequences. The impact may be disproportionately amplified in those with pre-existing mental illness, who are often suffering from loneliness and social isolation prior to the enhanced distancing from others imposed by the COVID-19 pandemic public health measures.

Introduction

Social isolation is a multi-dimensional construct that can be defined as the inadequate quantity and/or quality of interactions with other people, including those interactions that occur at the individual, group, and/or community level (Nicholson, 2012; Smith and Lim, 2020; Umberson and Karas Montez, 2010; Zavaleta et al., 2017). Some measures of social isolation focus on external isolation which refers to the frequency of contact or interactions with other people. Other measures focus on internal or perceived social isolation which refers to the person's perceptions of loneliness, trust, and satisfaction with their relationships. This distinction is important because a person can have the subjective experience of being isolated even when they have frequent contact with other people and conversely they may not feel isolated even when their contact with others is limited (Hughes et al., 2004).

When considering the effects of social isolation, it is important to note that the majority of the existing research has focused on the elderly population (Nyqvist et al., 2016). This is likely because older adulthood is a time when external isolation is more likely due to various circumstances such as retirement, and limited physical mobility (Umberson and Karas Montez, 2010). During the COVID-19 pandemic the need for physical distancing due to virus mitigation efforts has exacerbated the isolation of many older adults (Berg-Weger and Morley, 2020; Smith et al., 2020) and has exposed younger adults to a similar experience (Brooks et al., 2020; Smith and Lim, 2020). Notably, a few studies have found that young adults report higher levels of loneliness (perceived social isolation) even though their social networks are larger (Child and Lawton, 2019; Nyqvist et al., 2016; Smith and Lim, 2020); thus indicating that age may be an important factor to consider in determining how long-term distancing due to COVID-19 will influence people's perceptions of being socially isolated.

The general pattern in this research is that increased social isolation is associated with decreased life satisfaction, higher levels of depression, and lower levels of psychological well-being (Cacioppo and Cacioppo, 2014; Coutin and Knapp, 2017; Dahlberg and McKee, 2018; Harasemiw et al., 2018; Lee and Cagle, 2018; Usher et al., 2020). Individuals who experience high levels of social isolation may engage in self-protective thinking that can lead to a negative outlook impacting the way individuals interact with others (Cacioppo and Cacioppo, 2014). Further, restricting social networks and experiencing elevated levels of social isolation act as mediators that result in elevated negative mood and lower satisfaction with life factors (Harasemiw et al., 2018; Zheng et al., 2020). The relationship between well-being and feelings of control and satisfaction with one's environment are related to psychological health (Zheng et al., 2020). Dissatisfaction with one's home, resource scarcity such as food and

ISSN: 0975-4520
Vol-24 No. 04 October-December2021

self-care products, and job instability contribute to social isolation and poor well-being (Zavaleta et al., 2017).

Although there are fewer studies with young and middle aged adults, there is some evidence of a similar pattern of greater isolation being associated with negative psychological outcomes for this population (Bergin and Pakenham, 2015; Elphinstone, 2018; Liu et al., 2019; Nicholson, 2012; Smith and Lim, 2020; Usher et al., 2020). There is also considerable evidence that social isolation can have a detrimental impact on physical health (Holt-Lunstad et al., 2010; Steptoe et al., 2013). In a meta-analysis of 148 studies examining connections between social relationships and risk of mortality, Holt-Lunstad et al. (2010) concluded that the influence of social relationships on the risk for death is comparable to the risk caused by other factors like smoking and alcohol use, and greater than the risk associated with obesity and lack of exercise. Likewise, other researchers have highlighted the detrimental impact of social isolation and loneliness on various illnesses, including cardiovascular, inflammatory, neuroendocrine, and cognitive disorders (Bhatti and Haq, 2017; Xia and Li, 2018). Understanding behavioral factors related to positive and negative copings is essential in providing health guidance to adult populations.

Young adults are also more vulnerable to social isolation and loneliness as they are functionally very dependent on family and friends. While robust social restrictions are necessary to prevent spread of COVID-19, it is of critical importance to bear in mind that social distancing should not equate to social disconnection.

The present position paper aims to describe the nature of loneliness and social isolation among young persons, its effect on their health, and ways to cope with loneliness and social isolation during the COVID-19 pandemic.

Loneliness and social isolation

Loneliness and social isolation frequently co-occur and are all too common in young adults. While the term loneliness refers to subjective feelings, social isolation is defined by the level and frequency of one's social interactions. As a generally accepted concept, loneliness is defined as the subjective feeling of being alone, while social isolation describes an objective state of individuals' social environments and interactional patterns. Studies suggest that while loneliness and social isolation are not equal to each other, both can exert a detrimental effect on health through shared and different pathways.

Prior to the COVID-19 pandemic, loneliness and social isolation were so prevalent across Europe, the USA, and China (10–40%) (Leigh-Hunt et al., 2017; Xia and Li, 2018) that it was described as a "behavioral epidemic" (Jeste et al., 2020). The situation has only worsened with the restrictions imposed to contain viral spread.

Physical and mental health impacts

Loneliness is associated with various physical and mental repercussions, including elevated systolic blood pressure and increased risk for heart disease. Both loneliness and social isolation have been associated with an increased risk for coronary artery disease-associated death, even in middle-aged adults without a prior history of myocardial infarction (Heffner et al., 2011; Steptoe et al., 2013). Furthermore, research has shown that both loneliness and social isolation are independent risk factors for higher all-cause mortality (Yu et al., 2020).

Being lonely has several adverse impacts on mental health. Reduced time in bed spent asleep (7% reduced sleep efficiency) and increased wake time after sleep onset have been related to loneliness (Cacioppo et al., 2002; Fässberg et al., 2012). Increased depressive symptomatology may also be caused by loneliness, along with poor self-rated health, impaired functional status, vision deficits, and a perceived negative change in the quality of one's life (Lee et al., 2019). A systematic review of suicide risk also found that loneliness is associated with both suicide attempts and completed suicide among young adults (Fässberg et al., 2012). Loneliness, along with depressive symptoms, are related to worsening cognition over time. A systematic review concluded that loneliness and social isolation were significantly associated with incident dementia (Kuiper et al., 2015).

The proposed mechanism for the adverse health impacts of loneliness focuses on the physiological stress response (such as increased cortisol) (Xia and Li, 2018). Abnormal stress responses lead to adverse health outcomes. For social isolation, the mechanism may be related to behavioral changes, including an unhealthy lifestyle (such as smoking, alcohol consumption, lower physical activity, poor dietary choices, and noncompliance with medical prescription) (Kobayashi and Steptoe, 2018; Leigh-Hunt et al., 2017). A smaller social network with less medical support exacerbates these conditions. Recognizing and developing a better understanding of these possible mechanisms should help us to design the most impactful interventions.

ISSN: 0975-4520
Vol-24 No. 04 October-December2021

Tips for preventing the detrimental effect of loneliness and social isolation

There are established ways to maintain feelings of being connected to others despite having to maintain social distancing. By organizing our activities every single day, we can become more resistant to the onset of feelings of loneliness. For young adults, some tips are as follows.

Keep connections

Spend more time with your family. Utilize opportunities offered by the pandemic. Before the pandemic, some family members may have been distracted by work and school commitments, but now they may have more time at home and a higher degree of freedom to connect with young loved ones. In the era of social distancing, quality interactions using physical distancing of at least two meters along with the use of personal protective equipment such as masks enable contact with family members. This is vitally helpful to defend against loneliness.

Maintain social connections with technology. Along with the telephone, technology has changed the way people interact with each other. Social media platforms such as Facebook, Skype, Twitter, LINE, and Instagram enable people to stay connected in a variety of ways. Many young adults, however, may not be as familiar with these new technologies, and this style of interaction may not effectively serve their emotional needs. We can help young family members and friends to overcome such technology barriers. Online video chat is easier to use and sufficiently conveys nonverbal cues so that people can feel more engaged. Even without new technology available, communication through phone services is beneficial too. Conversations with a regular schedule through online or phone services with family members and loved ones can be helpful for young adults.

Maintain basic needs and healthy activities

Ensure basic needs are met. Family and carers should ensure food, medication, and mask accessibility for young adults, especially those who live alone.

Structure every single day.

To stay confined at home for much of every day is a psychological challenge for many people. When most outdoor activities are not available, it is not easy to maintain a regular daily schedule. However, we can encourage and support engagement with activities deemed pleasurable by the young person with benefits for physical, mental, and spiritual well-being. Regular scheduling is especially supportive for young people at risk of delirium, which is characterized by a disturbance of circadian rhythm. Television and YouTube channels adapted for young adults with proper physical and mental programs (e.g. exercise programs, mindfulness practice, and music programs) can also be very useful.

Maintain physical and mental activities. Exercise has benefits for physical and psychological health (specifically for mood and cognition). There is evidence that regular engagement in mentally challenging and new activities may reduce the risk of dementia. Although we may not be able to exercise together as before, we should maintain physical activities at the individual level. Besides, these personal physical activities can be performed at a group level by setting a common goal, sharing our progress, or creating a friendly competition via social media.

Pursue outdoor activities while following the guidance of social distancing. Brief outdoor activities are usually still possible and beneficial to health. One can feel much better as a result of sunlight exposure and the ability to see other people while still maintaining physical distancing.

Manage emotions and psychiatric symptoms

Manage cognition, emotion, and mood. Loneliness is often associated with negative thoughts (cognitions). Moreover, anxiety and depression may cause social withdrawal which will exacerbate the loneliness and isolation associated with social distancing. Acquiring reliable information about the pandemic helps avoid unnecessary worry and negative rumination. Conscious breathing, meditation, and other relaxation techniques are helpful for the mind and body and can decrease one's level of anxiety and depression. Emotional support for family members and friends is especially important during this harsh pandemic period, but one should not hesitate to seek help as well.

ISSN: 0975-4520
Vol-24 No. 04 October-December2021

Pay attention to psychiatric symptoms. The pandemic is quite stressful for every individual, and the significant stress can precipitate the occurrence or recurrence of mental disorders in some people, especially vulnerable young people. Depression, anxiety, and sleep disturbance are common, especially when one is under quarantine or self-isolation. Other symptoms include anger, irritability, and compulsive behaviors, such as repeated washing and cleaning. Furthermore, the experiences of social isolation and quarantine may bring back post-traumatic stress disorder symptoms for those previously exposed to other related events such as the severe acute respiratory syndrome and Middle East respiratory syndrome epidemics (Hawryluck et al., 2004). Online screening tools and rating scales can help us to understand the magnitude of the impact on our mental health. People with existing psychiatric disorders and their family members should pay special attention to their mental health and follow important tips to prevent worsening of symptoms. Medical assistance should always be sought when necessary, particularly in response to the expression of suicidal ideation. Those taking prescribed psychiatric medications should make sure that their supply is adequate, despite the limitations imposed by social distancing and the difficulty in visiting the pharmacy. Government agencies, social service organizations, and healthcare providers should consider offering online psychological services (or at least phone services) to those psychogeriatric patients who need medical advice during the social isolation period.

Take special care of young people with dementia and their family carers. The world and the way people live have significantly been disrupted in response to the COVID-19 pandemic. Changes are always stressful and require people to adapt. However, people with dementia have compromised adaptive function, and the pandemic may aggravate negative emotions and invoke behavioral and psychological symptoms. Recognizing that people with dementia may find it difficult to understand and comply with social distancing, caregivers should try to give instructions on hand hygiene, social distancing, and other protective measures in a simple, straightforward, and understandable way. Regular daily schedules and activities should be arranged and individually tailored to the dementia patient's interests. Family carers might be under especially severe levels of stress and feel even more isolated and alone. More detailed information on the unique aspects of the pandemic's effects on dementia caregiving is available on the Alzheimer's Disease International website (Alzheimer's Disease International, 2020).

Conclusion

The societal impact of the COVID-19 pandemic has been broad and very challenging. No aspect of normal societal functioning has been spared. Quarantine and social distancing are necessary measures to prevent the virus from spreading but also lead to elevated levels of loneliness and social isolation, which in turn produce physical- and mental-health related repercussions. Adopting appropriate steps to keep social and familial connections, maintain healthy activities, and manage emotions and psychiatric symptoms can help relieve the adverse consequences of loneliness and isolation. The pandemic has illuminated the pre-existing threat to well-being that young adults frequently experience with social isolation and loneliness. Perhaps we can use this moment to commit ourselves to addressing these unfortunate aspects of life for young adults in the post-pandemic period, for example, developing virtual health care, new technology, and government policy.

On the May 23, 2020, in collaboration with INTERDEM, IPA ran a webinar program addressing this very issue: "COVID-19, social distancing and its impact on social and mental health of the elderly population."

References:

Alzheimer's Disease International (2020). ADI offers advice and support during COVID-19 May 1, 2020 Available at: https://www.alz.co.uk/news/adi-offers-advice-and-support-during-covid-19; accessed May 15, 2020.

Berg-Weger M, Morley J (2020) Loneliness and social isolation in older adults during the COVID-19 pandemic: implications for gerontological social work. J Nutr Health Aging 24(5):456–458

Bergin A, Pakenham K (2015) Law student stress: relationships between academic demands, social isolation, career pressure, study/life imbalance, and adjustment outcomes in law students. Psychiatry Psychol Law 22:388–406

Bhatti A, Haq A (2017) The pathophysiology of perceived social isolation: effects on health and mortality. Cureus 9(1):e994. https://doi.org/10.7759/cureus.994

ISSN: 0975-4520
Vol-24 No. 04 October-December2021

Brooks S, Webster R, Smith L, Woodland L, Wesseley S, Greenberg N, Rubin G (2020) The psychological impact of quarantine and how to reduce it: rapid review of the evidence. Lancet 395:912–920

Cacioppo, J. T. et al. (2002). Do lonely days invade the nights? Potential social modulation of sleep efficiency. Psychological Science, 13, 384–387. doi: 10.1111/1467-9280.00469.

Cacioppo JT, Cacioppo S (2014) Social relationships and health: the toxic effects of perceived social isolation. Soc Personal Psychol Compass 8(2):58–72. https://doi.org/10.1111/spc3.12087

Cava M, Fay K, Beanlands H, McCay E, Wignall R (2005) The experience of quarantine for individuals affected by SARS in Toronto. Public Health Nurs 22(5):398–406

Child ST, Lawton L (2019) Loneliness and social isolation among young and late middle age adults: associations with personal networks and social participation. Aging Mental Health 23:196–204

Coutin E, Knapp M (2017) Social isolation, loneliness, and health in old age. Health Soc Care Community 25:799–812

Fässberg, M. M. et al. (2012). A systematic review of social factors and suicidal behavior in older adulthood. International Journal of Environmental Research and Public Health, 9, 722–745. doi: 10.3390/ijerph9030722.

Hawryluck, L., Gold, W. L., Robinson, S., Pogorski, S., Galea, S. and Styra, R. (2004). SARS control and psychological effects of quarantine, Toronto, Canada. Emerging Infectious Diseases, 10, 1206–1212. doi: 10:3201/eid1007.030703.

Heffner, K. L., Waring, M. E., Roberts, M. B., Eaton, C. B. and Gramling, R. (2011). Social isolation, C-reactive protein, and coronary heart disease mortality among community-dwelling adults. Social Science & Medicine, 72, 1482–1488. doi: 10.1016/j.socscimed.2011.03.016.

Jeste, D. V., Lee, E. E. and Cacioppo, S. (2020). Battling the Modern Behavioral Epidemic of Loneliness: Suggestions for Research and Interventions. JAMA Psychiatry. doi: 10.1001/jamapsychiatry.2020.0027.

Kobayashi, L. C. and Steptoe, A. (2018). Social isolation, loneliness, and health behaviors at older age: longitudinal cohort study. Annals of Behavioral Medicine, 52, 582–593. doi: 10.1093/abm/kax033.

Kuiper, J. S. et al. (2015). Social relationships and risk of dementia: A systematic review and meta-analysis of longitudinal cohort studies. Ageing Research Reviews, 22, 39–57. doi: 10.1016/j.arr.2015.04.006.

Lee, E. E. et al. (2019). High prevalence and adverse health effects of loneliness in community-dwelling adults across the lifespan: role of wisdom as a protective factor. International Psychogeriatrics, 31, 1447–1462. doi: 10.1017/s1041610218002120.

Leigh-Hunt, N. et al. (2017). An overview of systematic reviews on the public health consequences of social isolation and loneliness. Public Health, 152, 157–171. doi: 10.1016/j.puhe.2017.07.035.

Oxford COVID-19 Evidence Service (2020). Global Covid-19 Case Fatality Rates May 1, 2020 Available at: https://www.cebm.net/covid-19/global-covid-19-case-fatality-rates/; accessed May 12, 2020.

Steptoe, A., Shankar, A., Demakakos, P. and Wardle, J. (2013). Social isolation, loneliness, and all-cause mortality in older men and women. Proceedings of the National Academy Sciences of the United States of America, 110, 5797–5801. doi: 10.1073/pnas.1219686110.

US CDC (2020). Severe Outcomes Among Patients with Coronavirus Disease 2019 March 27, 2020 Available at: https://www.cdc.gov/mmwr/volumes/69/wr/mm6912e2.htm?s_cid=mm6912e2_w#T1_down; accessed May 1, 2020.

Dahlberg L, McKee KJ (2018) Social exclusion and well-being among older adults in rural and urban areas. Arch Gerontol Geriatrics 79:176–184

Dr Bhawna Bhadoriya
Ann: 3.3.2 (3)

Anne (6)

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 7 No. : 1, Feb. - 2021

International Journal of Social Science & Management Studies

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

ICMREDE

International Social Science & Management Welfare Association

SSMWA

5th Multidisciplinary International Conference on Entrepreneurship Development and Employment Opportunities

Date 13-14, February, 2021, Jabalpur (M.P.) INDIA

Radiant
Group of Institution

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

ISRS International Scientific Research Solution

International Journal of Social Science & Management Studies

20	डॉ. मनोज कुमार शर्मा अनिल कुमार पचौरी	संस्कार जीवन की यथार्थता	रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल	70-71
21	डॉ. राहुल पचौरी	हम अपने को जाने	अनुसंधान परिषद भोपाल (म.प्र.)	72-73
22	बाऊ गोखले	कृषि में बदलाव से जीविका का अध्ययन	पीएच. डी. अर्थशास्त्र, डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) जिला इन्दौर (म.प्र.) भारत	74-76
23	डॉ. ममता खपेडिया	आलिराजपूर जिले में आदिवासी महिलाओं की व्यवसायिक सहाभागिता का सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन	सहायक प्रध्यापक, श्री सीता राम जाजू शा.स्नात्तकोत्तर कन्या महाविद्यालय नीमच म.प्र.	77-81
24	प्रो. इंद्रजित नितीनराव बंगाळे	विज्ञापन पर स्मार्टफोन का प्रभाव और डिजिटल इंडिया की बदलती प्रकृति	सहा. प्राध्यापक, भारती विद्यापिठ कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट, पुणे	82-84
25	डॉ. सुधीर कुमार विश्वकर्मा	सौर ऊर्जा–बेहतर विकास की ओर	सेठ तारीफ सिंह जैन डिग्री, कॉलिज खट्टा प्रहलादपुर, बागपत, उ.प्र.	85-89
26	डॉ. रेनु गुप्त	महात्मा गाँधी जी और महिला सशक्तिकरण	(राजनीति विज्ञान)	90-92
27	रमाकांत	डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं महिला उत्थान	शोद्यार्थी, राजनीति विज्ञान, जिवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश	93-95
28	Babeeta Bain	भारत में महिलाओं का राजनीतिक सशक्तीकरण : स्थिति और चुनौतियाँ	Research Scholar, Political Science, Barkatullah University, Bhopal	96-99
29	Dr. Supriya Sanju	व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु जीवन में योग का महत्व	Assistant Professor, Amity University Haryana	100-105
30	प्रा. कृष्णा गणपत सावंत	पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए विज्ञापन जन जागरूकता का एक प्रभावी साधन	सहा. प्राध्यापक, भारती विद्यापिठ कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट, पुणे	106-109
31	धर्मेन्द्र कुमार खैरवार डॉ. भावना मदौरिया	भारतीय लोकतंत्रीय व्यवस्था में चुनाव सुधार : एक वर्तमान आवश्यकता	शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.)	110-113
32	Manali Upadhyay Dr. U.C. Jain	सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी (आईसीटी) का कृषि क्षेत्र में प्रभाव एवं विस्तार	RNTU, Bhopal, Principal Hamidiya Arts and Commerce College Bhopal	114-116
33	डॉ. रोहताश जमदग्नि	शिक्षा का अधिकार : चुनौतियां व अवसर, ऑनलाइन पद्धति एक अवसर : क्रियान्वयन नीति एक चुनौती	सचिव, भारतमातरम राष्ट्रपीठ, दिल्ली	117-130
34	डॉ. विजय सिंह परिहार मथुरा प्रसाद साकेत	Entrepreneurship Development and Employment Opportunities Rural Development in Make in India	महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय वि.वि., चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)	131-133

International Journal of Social Science & Management Studies - I.J.S.S.M.S.
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 7, No. – 1, Feb. – 2021, Conference Special Issues Hindi

भारतीय लोकतंत्रीय व्यवस्था में चुनाव सुधार : एक वर्तमान आवश्यकता

धर्मेन्द्र कुमार खैरवार, पी.एच.डी. शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)
शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.) वि.बी.यू., भोपाल (म.प्र.)
डॉ. भावना भदौरिया, मार्गदर्शक एवं शोध निर्देशिका
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान), शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश :– प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा भारतीय लोकतंत्रीय व्यवस्था में चुनाव सुधार की वर्तमान में आवश्यकता है जिस पर एक विशेष उल्लेख इस शोध पत्र द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। लोकतंत्र में चुनाव का एक विशेष महत्व होता है क्योंकि लोकतंत्र और लोकतंत्रीय व्यवस्था में निष्पक्ष चुनाव दोनों एक ही सिक्के दो पहलू है। लोकतंत्रीय प्रणाली में चुनाव निष्पक्ष रुप से कराने का दायित्व चुनाव आयेगा का होता है। जिसे ध्यान रखते हुए संविधान निर्माताओं द्वारा भारतीय संविधान के भाग–15 के अनुच्छेद 324 में निर्वाचन आयोग के गठन की व्यवस्था की है। जिसे चुनाव से संबंधित कार्य सौपा गया है जैसे– संबंधित निर्वाचक नामावली तैयार करना, निर्वाचनों का संचालन करना, और अधीक्षण निर्देशन, नियंत्रण का भी कार्यभार दिया गया है। क्योंकि लोकतंत्रीय व्यवस्था में निष्पक्ष निर्वाचन व निर्वाचन प्रणाली में सुधार लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार हैं। क्योंकि लोकतंत्र में चुनाव प्रकिया जितनी निष्पक्ष और विश्वास योग्य होगी उतना ही लोकतंत्र को स्थायित्व मिलेगा। प्रथम आम चुनाव के समय से ही चुनाव सुधार को लेकर बुद्विजीवियों के लिए चिंतन का विषय बना रहा है। भारत जैसे देश में लोकतंत्र के अन्तर्गत निर्वाचन प्रणाली को सरल, सहज, स्वीकार्य और ग्राहय बनाया जा सकता है। और लोकतंत्रीय व्यवस्था के संचालन में आने वाले रुकावटों को पहचान कर उसके समाधान निकाले जा सकते हैं। भारतीय चुनाव व्यवस्था में सुधारों की मांग काफी पुरानी है। 1960 के दशक में भारतीय चुनाव व्यवस्था में सुधारों की मांग प्रारम्भ हुई परंतु किसी भी दल के द्वारा सत्ता प्राप्त करने के पश्चात् चुनाव सुधारों की दिशा में गंभीरता पूर्वक कार्यवाही नहीं की गई। अतः समय रहते चुनाव सुधार नहीं किए गए तो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था कि बुनियाद हिल जायेगी फलस्वरुप निर्वाचन सुधार समय की आवश्यकता है।

भारतीय निर्वाचन प्रणाली :– वर्तमान समय में भारतीय निर्वाचन प्रणाली आज की स्थिति में आदर्श निर्वाचन प्रणाली नहीं है। क्योंकि इसमें सहभागिता की कमी दिखाई देती है। चुनाव प्रकिया में कोई भी राजनैतिक दल पचास प्रतिशत से कम वोट पाकर भी जीत दर्ज कर सरकार बना सकता है। भारतीय निर्वाचन प्रकिया को विभिन्न प्रकार के कारक जैसे– भाषा, धर्म, जाति, धन आदि प्रभावित करते हैं। और इसके अलावा भी संगठनात्मक शक्ति एवं विचारधारा भी भारतीय निर्वाचन प्रणाली को प्रभावित करती है। और विभिन्न दलों की कार्य प्रणाली एवं विचारधारा निर्वाचन में मुख्य भूमिका निभाती हैं। भारत में प्रथम आम चुनाव कराना लोकतंत्र के इतिहास में एक साहसिक कदम था। श्री सुकुमार सेन को प्रथम चुनाव आयुक्त के पद पर नियुक्त कर प्रथम आम चुनाव की बागडोर सौंपी गई। और फिर भारत में लोकतंत्र को महापर्व के रुप में मनाने के लिए मतदान सूचियां तैयार करने का काम किया गया। जिसमे 17 करोड़ 30 लाख व्यस्क भारतीयों को प्रथम आम चुनाव में मतदान के रुप में पंजीकृत किया गया। वर्तमान में 17 आम चुनाव सम्पन्न हो चुके है।

जिसमें मतदान, राजनीतिक दल एवं मतदान दल ने चुनाव में नित नये परिवर्तन कर लोकतंत्र में अपनी आस्था जतायी है। इसके साथ ही विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं के लिए होने वाले चुनाव सुधार की दिशा में किस प्रकार प्रयास किए जाने चाहिए यह चुझाव के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है। भारत में स्वतंत्र निर्वाचन तंत्र के महत्व का स्वीकार करते हुए भारतीय संविधान के भाग –15 में अनुच्छेद 324 से 329 तक निर्वाचन तंत्र से सम्बंधित सम्पूर्ण कार्यवाही दी गई है।

स्वतंत्र भारत में पहली बार 16 अक्टूबर 1989 को भारत के राष्ट्रपति आर. वेंकटरमण ने निर्वाचन आयोग को बड़ा रुप देने के उदे्श्य से दो निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति की श्री एस.एस. धनुवा और श्री वी. एस. सहगल की नियुक्ति मुख्य निर्वाचन आयुक्त की सहायता के लिए की गई थी। और इसकें पीछे एक प्रमुख कारण यह था कि इसी वर्ष 61 वें संविधान संशोधन के माध्यम से भारतीय नागरिक को मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई थी, जिससे मतदाताओं की संख्या में वृद्वि हो गई थी। वर्तमान समय में भारतीय लोकतंत्र में भ्रष्टाचार अपराध, धन एवं बल ने अपनी जड़े गहरी जमा रखी है और

को हटाने और रोकथाम के लिए राजनैतिक दलों में किसी प्रकार से कोई तत्परता दिखाई नहीं देती हैं। इस कारण वर्तमान समय में राजनेताओं की साख आम जनता के समक्ष गिरती हुई प्रतीत हो रही है। और यह सब ऐसें मुददे हैं जो कि चुनाव निष्पक्षता पर सवालिया निशान लगाते हैं। जिससे आम जनता का निर्वाचन से विश्वास उठता हुआ नजर आ रहा हैं। यही कारण है कि चुनाव सुधारों हेतु सरकार ने समय की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विभिन्न समितियों तथा आयोग का गठन किया जो निम्नलिखित है :–

तारकुण्डे समिति – तारकुण्डे समिति ने सन् 1974–1975 में मतदाताओं की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष करने हेतु प्रस्ताव रखा। जिसे भारतीय संविधान में 61 वें संविधान संशोधन के द्वारा लागू किया गया। तारकुण्डे समिति ने आय के स्त्रोतो का उल्लेख तथा आय– व्यय का पूरा हिसाब लिखना समस्त राजनीतिक दलों के लिए अनिवार्य करने के साथ ही चुनाव आयोग द्वारा इसकी जॉच करने हेतु सिफारिश की। और यह भी उल्लेख किया गया कि चुनाव के दौरान मंत्रिमण्डल का कोई भी सदस्य सरकारी खर्च पर यात्रा ना करें। वाहनों, विमानों, का प्रयोग ना करें सभा सम्मेलनों में सरकारी मंच ना बनाया जाए।

दिनेश गोस्वामी समिति – मई,1990 में आयी दिनेश गोस्वामी समिति ने सत्ताधारी दल द्वारा सरकारी मशीनगरी के दुरुपयोग को रोकने के साथ–साथ किसी भी उम्मीदवार को दो या दो से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों चुनाव लड़ने की अनुमति ना देने संबंधी सुझाव दिये। दिनेश गोस्वामी समिति ने चुनाव आयोग को तीन सदस्यीय निकाय बनाने हेतु सुझाव दिया। साथ ही भविष्य में होने वाले सभी चुनावों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) का प्रयोग किये जाने की सिफारिश प्रस्तुत की। इन्द्रजीत गुप्ता समिति –

इन्द्रजीत गुप्ता समिति 1998 में चुनाव में होने वाले प्रशासनिक व्यय एवं उम्मीवारों का व्यय राजकोष से वहन होने की बात कही।

विधि आयोग की रिर्पोट :– विधि आयोग की रिपोर्ट ए.पी. शाह ने पुस्तुत की। जिसमें चुनाव सुधारों हेतु राजनीतिक दलों के आय– व्यय एवं स्त्रोतों को सार्वजनिक करने, धर्म का राजनीति में दुरुपयोग रोकने एवं राजनीति में अपराधिकरण रोकने हेतु कानून बनाने संबंधी सुझाव प्रस्तुत किए गए।

चुनाव सुधार की आवश्यकता :–

- गठबंधन की अतंहीन संभावनाओं के कारण भारत में चुनाव का अनुमान लगाना बेहद कठिन है।
- भारत के मतदाता संसद या लोकसभा के 543 सदस्यों के लिए सांसदों का चुनाव करती है।
- दुनिया के सातवें बड़े देश और दूसरी सबसे अधिक आबादी वाले देश में चुनाव कराना बेहदजटिल कार्य है।
- चुनाव प्रकिया में लाखो मतदान कार्यकर्ता, पुलिस और सूरक्षा कर्मी शहरों, कस्बो, गॉवो और बस्तीयों में तैनात होते है।
- इस बार लोक सभा के चुनाव में 18 से 19 वर्ष के बीच के आयु वाले लगभग डेढ़ करोड़ युवा मतदाता सम्मिलित हुए जिन्होंने पहली बार मतदान किया जो अधिक शिक्षित और तकनीक से लैस है।
- अब आयोग को चुनाव प्रचार की तेजी से बदलती शैली से भी जूझना होगा।
- पहले चुनाव में पोस्टर– बैनर का इस्तेमाल आम बात होती थी पर अब लगभग 50 करोड़ भारतीयों के पास स्मार्ट फोन है। और इतने ही लोग इंटरनेट का इस्तेमाल भी करते हैं।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 83 में यह कहॉ गया है कि लोकसभा का कार्यकाल उसकी पहली बैठक की तिथि से पॉच वर्ष का होगा।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 85 यह राष्ट्रपति को लोकसभा भंग करने की शक्ति प्रदान करता हैं। अनुच्छेद : 172 यह विधान सभा का कार्यकाल उसकी पहली बैठक की तिथि से पॉच वर्ष का होगा।
- अनुच्छेद : 174 यह राज्य के राज्यपाल को विधानसभा भंग करने का अधिकार देता है।
- अनुच्छेद : 356 यह केन्द्र सरकार को राज्य में संविधान के विफलता के कारण राष्ट्रपति शासन लगाने का अधिकार देता हैं।
- इसके अलावा जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के साथ–साथ संबंधित संसदीय प्रकिया में भी संशोधन करना होगा।

निष्पक्ष चुनाव को प्रभावित करने वाले कारक :–

- प्राय: उम्मीदवार अपने आपराधिक रिकॉर्ड, सम्पत्ति, देनदारियों, आय तथा शैक्षणिक योग्यता का विवरण नही देते है।

- चुनाव में धन खर्च की बढ़ती भूमिका हमारी चुनाव व्यवस्था का गंभीर दोष हैं। क्योंकि चुनाव में पैसा पानी की तरह बहाया जाता है। और अत्यधिक खर्च के कारण सामान्य व्यक्ति चुनावी प्रकिया से दूर होता जा रहा है।
- चुनाव जीतने के लिए उम्मीदवार गलत साधनों का भी उपयोग करते है जैसे– बाहुबल, हिंसा
- धमकी और बूथ कैप्चरिंग की बड़ी भूमिका होती है।
- अपराधी व्यक्ति राजनीति में प्रवेश कर लेते है। और फिर पुरी कोशिश करते है कि उनके खिलाफ मामले को समाप्त कर दिया जाए।
- किसी मजबूत उम्मीदवार के खिलाफ निर्देलीय उम्मीदवार को उतारा जाता है जिससें कि उसके वोट काटें जा सकें।
- ऐसे कई राजनीतिक दल भी है जो विशेष जाति या समूह से आते है। और यह सब पार्टियों पर भी दबाव डालते है। और उन्हें टिकिट भी दिये जाते है।
- जाति पर आधारित राजनीति देश की बुनियाद और एकता पर प्रहार कर रही हैं। जिस कारण अक्सर उम्मीदवारों का चयन उपलब्धियों, क्षमता और योग्यता के आधार पर न होकर जाति, पंथ
- और समुदाय के आधार पर होता हैं।
- स्वतंत्रता प्रप्ति के बाद सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरवाद की राजनीति ने देश की तमाम हिस्सों में आंदोलनों का जन्म दिया।

चुनाव सुधार से संबंधित समितियॉ और आयोग :–

- तारकुंडे समिति (1974–75)
- चुनाव सुधार पर दिनेश गोस्वामी समिति (1990)
- राजनीति के अपराधी करण पर वोहरा समिति (1993)
- चुनावों में राज्य वित्त पोषण पर इन्द्रजीत गुप्ता समिति (1998)
- चुनाव सुधारों पर विधि आयोग की रिपोर्ट (1999)
- चुनाव सुधारों पर चुनाव आयोग की रिपोर्ट (2004)
- शासन में नैतिकता पर वीरप्पा मोइली समिति (2007)
- चुनाव कानूनों और चुनाव सुधारों पर तनखा समिति (2010)

इन समितियों और आयोगों की अनुशंसाओं के आधार पर चुनाव प्रणाली, चुनाव मशीनरी और चुनाव प्रकिया में कई सुधार किये गए हैं। चुनाव सुधार को दो कालखंडो में भी बॉट कर अध्ययन किया जा सकता है :–

- वर्ष 2000 से पूर्व चुनाव सुधार
- वर्ष 2000 के बाद चुनाव सुधार

वर्ष 2000 से पूर्व चुनाव सुधार :–

- संविधान के 61 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1989 के तहत अनुच्छेद 326 में संशोधन करके मतदान की आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष की गई।
- चुनाव में कार्य कर रहे अधिकारी और कर्मचारी चुनाव कार्य के दौरान प्रति नियुक्ति पर माने जायेगें।
- चुनाव के दौरान कर्मी चुनाव आयोग के नियंत्रण में रहेगें।
- नामांकन पत्रों के लिए प्रस्तावकों की संख्या में 10 फीसदी बढ़ाया गया।
- राष्ट्रीय सम्मान अधिनियम, 1971 का अपमान करने पर 6 साल तक चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लगाना।
- दो से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लगाना और उम्मीदवार के मर जाने पर भी चुनाव स्थगित न होना।
- इस चरण में अब तक के सबसे बड़े चुनाव सुधारों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (म्टडद्ध का प्रचलन में आना शामिल है। प्रयोग के तौर पर म्टड का पहली बार उपयोग वर्ष 1998 में राजस्थान, मध्यप्रदेश और दिल्ली के चुनावों के दौरान किया गया था।
- वर्ष 1999 में गोवा विधानसभा चुनाव में पहली बार EVM का पूरे राज्य में प्रयोग हुआ।

वर्ष 2000 के बाद चुनाव सुधार :–

1. **एक्जिल पोल पर प्रतिबंध** :– जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के तहत चुनाव आयोग ने मतदान की शुरुआत होने से लेकर मतदान समाप्त होने के आधा घंटे बाद तक एक्जिट पोल को प्रतिबंधित कर दिया है। एवं लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में चुनाव के दौरान एक्जिट पोल के परिणाम प्रकाशित करने पर दो वर्ष का करावास या जुर्माना अथवा दोनों सजा हो सकता है।

2. **चुनावी खर्च पर सीलिंग** :– लोकसभा सीट के लिए चुनावी खर्च की सीमा को बढ़ा कर बड़े राज्यों में 70 लाख एवं छोटे राज्यों में 28 लाख रुपये तक है।
3. **पोस्टल बैलेट के माध्यम से मतदान** :– सरकारी कर्मचारियों और बलों को चुनाव आयोग की सहमति के बाद पोस्टल बैलेट के माध्यम से मतदान करने की अनुमति है। और विदेशो में रहने वाले ऐसे भारतीय नागरिकों को मतदान का अधिकार है जिन्होंने किसी अन्य देश की नागरिकता प्राप्त नहीं की है।
4. **जागरुकता और प्रसार** :– युवा मतदाताओं को मतदान हेतु जागरुक बनाने के लिए हर वर्ष 25 जनवरी राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रुप में मनाया जाता है। और यह सिलसिला वर्ष 2011 से शुरु हुआ।
5. **नोटा (NOTA)** :– वर्ष 2013 से नोटा व्यवस्था लागू करना एक अहम चुनाव सुधार माना जाता है। नोटा का मतलब है उपरोक्त में से कोई नही। यानी नॉन ऑफ द एबव (None Of the Above)
6. **मतदाता निरीक्षण पेपर ऑडिट ट्रायल** :– यह म्टड से जुड़ी एक स्वतंत्र प्रणली है, जो मतदाताओं को अनुमति देती है कि वे यह सत्यापित कर सकते हैं कि उनका मत उक्त उम्मीदवार को पड़ा हैं। जिसके पक्ष में उसने मत डाला है। जिससे जब मत पड़ता है तो एक मुद्रित पर्ची निकलती है जिस पर उस उम्मीदवार का नाम रहता है।
7. **तकनीकी का प्रयोग** :– निर्वाचकों के लिए कंप्यूटरीकृत डेटाबेस का निर्माण, व्यापक फोटो इलेक्टोरल सेवा, फर्जी और डुप्लीकेट इंट्री को खत्म करने के लिए डी. डुप्लीकेशन तकनीक लाना। मतदान प्रकिया की वीडियो रिकॉडिंग कराना। आयोग ने ऑनलाइन संचार यानी कोमेट नाम की एक प्रणाली विकसित की है इसमे चुनाव के दिन प्रत्येक मतदान केन्द्र की निगरानी करना संभव हो गया हैं। GPS का उपयोग कर मतदान केन्द्र की अब रियल टाइम निगरानी भी की जा रही है। चुनाव आयोग ने चुनाव के दौरान आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की रिपोर्ट दर्ज करने में नागरिकों को सक्षम बनाने के लिये 'सीविजिल' एप लॉन्च किया है।

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 271(CCLXXI) B
ISSN : 2278-9308 Fabruary, 2021

तुलसी के राम

डॉ.(श्रीमती) ज्योति धनोतिया
सह प्राध्यापक–हिन्दी शासकीय हमीदिया कला एवम् वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

सारांश

तुलसी के राम पूरे भारतवर्ष के राम वरंच संपूर्ण विश्व के राम हैं। तुलसी के राम मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के साक्षात प्रतिमान हैं। वे एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श शिष्य, आदर्श पति, एक आदर्श नागरिक एवं स्थितप्रज्ञ आदर्श राजा थे। उनका उत्तम चरित्र और आचरण अनुकरणीय है। शील और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति, भक्तों पर कृपा करने वाले उदारमना, राम–राज्य की स्थापना करने वाले श्रीराम जन–जन के हृदय में निवास करने वाले, करूणानिधान श्रीराम सबके प्रेरणा सोत हैं।

कुंजी– स्थितप्रज्ञता, मर्यादा पुरूषोत्तम, शील–सौंदर्य, जीवन–मूल्य, उदारमना, राम राज्य।

1. प्रस्तावना
2. तुलसीदास का जीवन–परिचय और रचनाएं
3. तुलसी के राम–
   1. मानवता के पोषक, विश्व–बंधुत्व की भावना
   2. आदर्श पुत्र
   3. आदर्श शिष्य
   4. आदर्श भाई
   5. आदर्श पति
   6. आदर्श मित्र
   7. भारतीय संस्कृति के साक्षात् प्रतिमान
   8. शील, सौंदर्य और मर्यादा पुरूषोत्तम
   9. नारी के प्रति सम्मान
   10. एक आदर्श राजा
   11. स्थित – प्रज्ञता
   12. भक्तों के प्रति उदारमना
4. चतुर्थ अध्याय – उपसंहार

1.प्रस्तावना –

तुलसी के राम केवल तुलसी के राम नहीं, वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष के राम हैं, वरंच विश्व के राम हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम राम मानवता के पोषक, विनम्रता की प्रतिमूर्ति, परिवार और मित्रों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने वाले, दीन–हीन की सहायता करने वाले एवं नारियों के प्रति सम्मान भावना रखने वाले, माता–पिता एवं गुरू की आज्ञा का पालन करने वाले, दुर्जनों को दण्ड देने वाले, विश्व–बंधुत्व के भाव रखने वाले एक ऐसे आदर्श व्यक्ति, जो भारतीय संस्कृति के जीवंत प्रतिमान है, भारतीयों के आदर्श पुरूष श्री राम तुलसी के राम हैं।

2. तुलसीदास का जीवन–परिचय और रचनाएं–

हिन्दी साहित्य के इतिहास में मध्यकाल के भक्तिकाल की सगुण भक्ति काव्यधारा की रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास अद्वितीय प्रतिभाशाली कवि हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी सरयूपारीण ब्राह्मण एवं भक्त कवि थे। गोसाई चरित के आधार पर उनका जन्म संवत् 1554 वि.ठहरता है–

"पन्द्रह सौ चौवन विषै, कालिन्दी के तीर।।
सावन शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‌यौ शरीर।।" 1

इनके माता–पिता का बचपन में ही देहांत हो गया था। कहा जाता है कि बाबा नरहरिदास ने इनका पालन–पोषण किया और रामकथा सुनाई। इनके बचपन का नाम रामबोला था। इनकी मृत्यु के संबंध में भी विवाद है, किन्तु निम्न मत अधिक मान्य है इनकी मृत्यु संवत् 1680 को श्रावण कृष्णा तीज को हुई–

"संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण श्यामा तीज शनि, तुलसी तज्यौ शरीर।।"

तुलसीदास के जन्म स्थान के संबंध में भी बड़ा ही विवाद है। इनका जन्म बांदा जिले के सोरो नामक ग्राम में हुआ था। यही मत अधिक मान्य है।

जनश्रुति के अनुसार गोस्वामीजी की माता का नाम हुलसी तथा पिता का नाम आत्माराम था। इनके गुरू का नाम नरहरिदास था। तुलसीदास का विवाह दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ। रत्नावली की मधुर भर्त्सना से वे रामभक्ति की ओर मुड़े।

रचनाएं –

गोस्वामी तुलसीदास ने अनेक ग्रंथ लिखे हैं–

1. रामचरित मानस इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है।
2. कवितावली,
3. गीतावली और
4. कृष्ण गीतावली, तुलसीदास की सरस रचनाएं हैं।
5. विनय–पत्रिका में भक्त तुलसीदास का दार्शनिक रूप उच्चकोटि के कवित्व के साथ सामने आता है।
6. दोहावली में अधिकतर दोहे उपदेश तथा भगवद्‌भक्ति से संबंध रखने वाले हैं।
7. बरवै रामायण और
8. रामलला नहछू ग्रामीण अवधी की मिठास के लिए प्रसिद्ध हैं।
9. पार्वती–मंगल में शिव–पार्वती के विवाह का वर्णन है। इनके अतिरिक्त
10. जानकी–मंगल,
11. वैराग्य संदीपनी और
12. रामाज्ञा प्रश्न, भी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

3.तृतीय अध्याय – तुलसी के राम

तुलसी के आराध्य मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम है। अवधी भाषा में लिखा गया "रामचरितमानस" तुलसी की कीर्ति का मूल आधार स्तंभ है। यह सुप्रसिद्ध महाकाव्य है, जिसमें रामकथा सात काण्डों में विभक्त है। वि.सं. 1631 में रामनवमी के दिन तुलसी ने "रामचरितमानस" की रचना प्रारंभ की। दो वर्ष सात महीने, छब्बीस दिनों में ग्रंथ की समाप्ति हुई। वि.सं. 1633 में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में राम–विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गये।

तुलसीदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी प्रतिभा, कल्पना, निरीक्षण तथा व्यावहारिक ज्ञान अत्यंत उच्चकोटि का एवं अद्वितीय हैं। कविता उनके भक्त हृदय का प्रतिबिम्ब थी। उनका उद्‌देश्य राम गुण–गान था। उन्होंने स्वयं कहा है–

"एहि यह रघुपति चरित उदारा,
अति पावन पुरान श्रुति सारा।"

'स्वांतः सुखाय रघुनाथ गाथा' लिखने वाले भक्त कवि तुलसी की बराबरी भला कौन कर सकता है। स्वांतः सुखाय होते हुए भी तुलसी की भक्ति–भावना में लोकमंगल की प्रबल भावना है। उनके आराध्य राम शील, सौंदर्य और शक्ति तीनों के गुण सागर हैं। भारतीय संस्कृति की ऐसी कोई भी धारा नही जो कवि से छूट गयी हो। उन्होंने मर्यादा पुरूषोत्तम राम के आदर्श चरित्र की सृष्टि कर मृत–प्रायः हिन्दू जाति में प्राणों का संचार किया।

"कबीर के राम और तुलसी के राम अलग–अलग है। कबीर के राम निर्गुण ईश्वर हैं, निराकार ब्रह्म हैं। वे न तो दिखायी देते हैं, न रूप, रंग, आकार संपन्न हैं। वे न तो मूर्ति पूजा के रूप में विद्यमान हैं, और न कहीं अवतार धारण करते हैं। वे तो सर्वव्यापी हैं, अणु–अणु में बसे हुए निर्गुण, निराकार परब्रह्म हैं, जिन्हें कबीर राम कहकर पुकारते हैं। जबकि तुलसीदास के राम सगुण ईश्वर हैं, साकार भगवान हैं, जिन्होंने राजा दशरथ के घर अवतार धारण किया है। तुलसी के राम राजा के पुत्र हैं, जो श्रेष्ठ मानव है। शील, सौंदर्य और शक्ति से संपन्न राम तुलसी के आराध्य हैं जो मर्यादा पुरूषोत्तम राम हैं। तुलसी ने अपने महाकाव्य में राम के विभिन्न रूप जैसे कि आदर्श मानव, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श वीर, आदर्श राजा को चित्रित किया है। तुलसी के 'रामचरित मानस' और 'राम' का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' और उनके राम पर पड़ा। तुलसी के राम परब्रह्म विष्णु के अवतार और मर्यादा पुरूषोत्तम है। गुप्तजी ने कहा है कि रामचरित मानस के राम 'साकेत' में नायकों के भी नायक और सबके शिक्षक अथवा शासक के रूप में प्रतिष्ठित है। 1

निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर हम 'तुलसी के राम' का चित्रण करने का एक छोटा–सा प्रयास, जिसे समुद्र को सीमा में बांधना , करेंगे।

1. श्रेष्ठ मानव –

तुलसी के राम श्रेष्ठ मानव है, वे मानवता के पोषक हैं। कुछ लोग तुलसी पर जाति भेद का आरोप लगाते हैं, किन्तु तुलसी के राम तो वन ही इसलिए गए थे कि भारतभूमि को एकसूत्र में पिरोते हुए दया, ममता, करूणा, मैत्री के भाव भर सके। ऋषि–मुनियों के रूप में ज्ञान का आदर, राक्षसों के रूप में विद्यमान अन्याय, अत्याचार, असत्य और बुराई का अंत, निषादराज गुह (जो आदिवासी है) की मित्रता और आतिथ्य स्वीकार करना केवट की नाव से गंगा पार करना, शबरी (भीलनी) पर कृपा करना (झूठे बेर खाना), सुग्रीव (वानर), जामवंत (रीछ) जटायु (पक्षी), सबका सम्मान करना, विनम्रता से रहना और लंका विजय के पश्चात लंका पर अपना अधिकार न जमाकर, विभीषण को राज्य देना– ये सारे गुण ये सभी घटनाएं राम को एक श्रेष्ठ मानव सिद्ध करती हैं। निषाद जब प्रियजनों और बंधु–बांधवो के साथ कंद–फल लेकर श्रीरामजी के पास जाता है, तब श्रीरामजी का प्रेम से भरा हृदय उदार मानवता का उदाहरण प्रस्तुत करता है–

"करि दंडवत भेंट धरि आगें, प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे।।
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूंछी कुसल निकट बैठाई।।"

श्री रघुनाथजी ने स्वाभाविक स्नेह के वश होकर उसे अपने पास बैठाकर कुशल पूछी इसी प्रकार केवट प्रसंग में–

"सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करूनाऐन चितई जानकी लखन तन।।"
कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोई करू जेहिं तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत विलंबु उतारहि पारू।
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहि नर भवसिंधु अपारा।।
सोई कृपालु केवटहि निहोरा। जेहि जगु किए तिहु पगहु ते थोरा।।"

एक बार जिनका नाम स्मरण करते ही मनुष्य अपार भवसागर से पार उतर जाते हैं और जिन्होंने (वामनावतार में) जगत् को तीन पग से भी छोटा कर दिया था, वही कृपालु श्री रामचन्द्रजी (संसारी से पार उतारने के लिए) केवट का निहोरा कर रहे हैं।

2. आदर्श पुत्र –

तुलसी के राम आदर्श पुत्र हैं। भारत का जन–जन राम के आदर्श रूप को गृहीत कर जीवनयापन करना अपने जीवन का ध्येय मानता है–

"प्रातकाल उठि के रघुनाथा।
मातु पिता गुरू नावहि माथा।।" 1

माता–पिता की आज्ञा मानकर वे वन जाते हैं। सभी कैकेयी को उनके वन गमन का दोष देते हैं, किन्तु तुलसी के राम कैकेयी से कहते हैं–

"सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोष निहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।।"

हे जननी! (तुलसी के राम कैकेयी को जननी अर्थात जन्म देने वाली कहते हैं) सुनो वही पुत्र बड़भागी है, जो पिता–माता के वचनों का अनुरागी (पालन करने वाला) है। आज्ञा पालन के द्वारा माता–पिता को संतुष्ट करने वाला पुत्र, हे जननी! सारे संसार में दुर्लभ है।

राम अपने गुरू की आज्ञा शिरोधार्य करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं– चाहे वशिष्ठजी हो या विश्वामित्रजी की। विश्वामित्रजी की आज्ञा से ही राम उनके यज्ञ की रक्षा करते हैं अहिल्या का उद्धार करते हैं। गुरू की आज्ञा पाकर जनकपुरी देखने जाते हैं– "मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन सुखदाता।।"

उनकी आज्ञा से ही राजा जनक के यहां सीता–स्वयंवर में धनुष–भंग करते हैं–

"विस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय वानी।।
उठहु राम भंजहु भवचाया। भेटहु तात जनक परितापा।।
सुनि गुरू वचन चरन सिरू नावा। हरषु विषादु न कछु उर आवा।।"

उक्त चौपाई का अंतिम चरण राम की स्थित–प्रज्ञता को दर्शाता है। स्थित प्रज्ञता अर्थात सुख दुख, हर्ष–विषाद से ऊपर उठना। "अयोध्याकांड" में भी कवि ने राम की स्थित–प्रज्ञता का कलात्मक चित्रण किया है। राम का प्रशांत–गहन आनन राज्याभिषेक के समाचार से प्रसन्न नही हुआ, वनवास के समाचार से मलिन नहीं हुआ। सुख और दुख के चरम क्षणों में एकरसता अथवा समरसता ही स्थित प्रज्ञता है।

राम–वनगमन–प्रसंग में राम की महत्ता अथवा पुरूषोत्तमता प्रशांत–गहन स्वरूप प्राप्त करती है, उतनी अन्यत्र नहीं। पितृभक्ति के इतिहास में राम का स्थान श्रवणकुमार या भीष्म के साथ सर्वश्रेष्ठ है।

तुलसी के राम 'आदर्श भाई' भी है। बचपन में अपने छोटे भाइयों का ध्यान रखना और बड़े होने पर भरत के लिए सिंहासन त्याग और वनगमन स्वीकार करना, ऐसी भातृ–भावना कहीं और देखने को नहीं मिलती।

भरतजी गुरू माताओं, शत्रुघ्न और नगरवासियों के साथ श्री राम को वन से अयोध्या ले जाने के लिए आते हैं, तब भरत का अपने बड़े भाई के प्रति आदर एवं सम्मान और श्रीराम का अपने अनुज के प्रति प्रेम देखते ही बनता है–

"बोले गुरू आयस अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगल मूला।।
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई।।"

श्री रामचन्द्रजी गुरु की आज्ञा के अनुकूल मनोहर कोमल और कल्याण के मूल वचन बोले–हे नाथ ! आपकी सौगंध और पिताजी के चरणों की दुहाई है (मैं सत्य कहता हूं कि) विश्वभर में भरत के समान भाई कोई हुआ ही नहीं।

आदिकवि वाल्मीकि के राम भगवान न होकर महापुरुष है, जबकि तुलसी ने ईश्वर का महिमा–मंडित रूप प्रदान कर राम को हमेशा को हमेशा के लिए जीवन और साहित्य का अनिवार्य अंग बना दिया है। तुलसीदास 'मानस' में कहते हैं– "एक अनीह अरूप अनाया। जब सच्चिदानंद परधामा। व्यापक विस्वरूप भगवाना। तेहि धरि देह चरित कृत नाना।"

तुलसी के राम एक आदर्श पति हैं। उनके पिता दशरथ की तीन रानियां थीं। वे एक पत्नी व्रत का पालन करते हैं। रावण की लंका से सीता को सकुशल लाकर वे अपने पुरुषार्थ का परिचय देते हैं।

राम "रामचरित मानस" महाकाव्य के प्रधान पात्र हैं, नायक हैं। मुख्य पात्र होने के कारण भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में उनका जीवन दिखाया गया है और सभी परिस्थितियों में उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू उभरकर आते हैं।

वीरता के साथ–साथ धीरता, गंभीरता और कोमलता राम का गुण है। यही उनका "रामत्व" है। बाल्यावस्था में जिस प्रसन्नता से राम और लक्ष्मण ने घर छोड़ा और विश्वामित्र के साथ बाहर रहकर अस्त्र–शस्त्र शिक्षा प्राप्त की तथा विघ्नकारी विकट राक्षसों के साथ अपना बल आजमाया, यह उनके उल्लासपूर्ण साहस का सूचक है, जिसे 'उत्साह' कहते हैं। बाल्य–अवस्था में ही उन्होंने विकट प्रवास किये थे। चौदह वर्ष वन में रहकर अनेक कष्टों का सामना करते हुए जगत् को परेशान करने वाले कुंभकर्ण और रावण जैसे राक्षकों को मारा। 'मानस' के द्वारा हम राम और लक्ष्मण जैसे दो अद्वितीय वीरों को पृथ्वी पर पाते हैं। वीरता की दृष्टि से देखें तो हम इन दो पात्रों में कोई भेद नहीं कर सकते। पर सीता स्वयंवर प्रसंग में दोनों–भाइयों के स्वभाव में काफी फर्क दिखायी देता है जो अंत तक दिखायी देता है। राम की जो धीरता और गंभीरता हम परशुराम के साथ संवाद करने में देखते हैं, वह धीरता और गंभीरता मानस के अनेक प्रसंगों में देखते हैं। इतना तो हम कह सकते हैं कि राम का स्वभाव धीर और गंभीर था तथा लक्ष्मण का उग्र और चपल। तुलसी के राम स्त्रियों का, नारियों का सम्मान करते हैं–शापित अहिल्या का उद्धार करते हैं, भक्तिन 'शबरी' के झूठे बेर खाकर माँ के समकक्ष स्थान देते हैं।

तुलसी के राम भारतीय संस्कृति के साक्षात् प्रतिमान हैं। भारतीय संस्कृति के समस्त गुण उनमें विद्यमान हैं। भारतवर्ष के समस्त निवासी उनके आदर्शों का अनुसरण करते हैं।

राम शील, सौंदर्य और शक्ति, तीनों गुणों के सागर हैं। राम व्यवहार कुशल हैं। तीनों लोकों में उनके जैसा सौंदर्य किसी का नहीं–

राम को रूप निहारत जानकि , कंकन के नग की परछाहीं ।
याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही, पल डारति नहीं।।

"काम कोटि छबि स्याम सरीरा। नील कंज वारिद गंभीरा।।
अरून चरन पंकज नख जोती। कमल दलन्हि बैठे जनु मोती।।"

तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोत्तम है। उनका आचरण, व्यवहार, प्रेम स्नेह सबकुछ मर्यादित है। उनका मर्यादित आचरण भारतीयों का प्रेरणा–स्रोत है। राम ने कुंभकर्ण और अत्याचारी रावण को मारकर बुराई पर अच्छाई की जीत दर्ज की।

तुलसी के राम एक आदर्श राजा है। उनका राम–राज्य आज भी अनुकरणीय है। 'रामचरित मानस' में राजा के आदर्श के माध्यम से राजनैतिक आदर्शों की भी पर्याप्त व्याख्या देखी जा सकती है।

तुलसी ने राम के राज्य को आदर्श माना है और गांधीजी ने अपने 'आदर्श–राज्य' को 'राम–राज्य' की संज्ञा दी।

इस 'आदर्श राज्य' की कल्पना तुलसी ने इसीलिए की, क्योंकि उस समय शासक अत्यंत भ्रष्ट हो रहा था, प्रजा बहुत संत्रस्त थी और जन–जीवन नाना प्रकार के कष्टों से परिपूर्ण था। 'तुलसी' की यह 'आदर्श–राज्य' संबंधी विचारधारा भारतीय संस्कृति की नींव पर स्थित है। इसमें तुलसी ने 'राम–राज्य' का जो निरूपण किया है वह निःसंदेह संपूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय है–

"दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम–राज नहिं काहुहि व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।"

'राम–राज्य' में दैहिक दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बतायी हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने–अपने धर्म का पालन करते हैं।

"सब उदार सब पर उपकारी। विप्र चरन सेवक नर नारी।।
एक नारि व्रत रत सब झारी। ते मन बच कम पति हितकारी।।

सभी नर–नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और सभी ब्राह्मणों के चरणों के सेवक हैं। सभी पुरूष मात्र एक पत्नीव्रती हैं। इसी प्रकार स्त्रियां भी मन, वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं।

इस प्रकार तुलसी का 'राम–राज्य' वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी सामयिक है, प्रासंगिक है।

4. उपसंहार –

तुलसीदास न सिर्फ अनन्य रामभक्त थे, परंतु अपने समय के जागरूक लोकनायक भी थे। वे शील, सौंदर्य और शक्ति के उपासक थे। तुलसी की भक्ति–भावना में लोकमंगल की प्रबल भावना है। उनके आराध्य राम शील, सौंदर्य और शक्ति तीनों के गुण–सागर हैं।

तुलसी के राम महामानव मर्यादा पुरूषोत्तम राम है। सबके आदर्श और प्रेरणा–स्रोत, भारतीय संस्कृति के साक्षात् प्रतिमान तुलसी के राम जन–जन के राम हैं।

संदर्भ सूची :–

1. आदर्श हिन्दी दर्शन – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, पृ. 280, प्रकाशक–यूनिवर्सल बुक डिपो, पाटनकर बाजार, ग्वालियर, संस्करण–1977
2. तुलसी के राम–डॉ.भरतकुमार एन.सुथार इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ऑल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेजेस, पृ.25, Vol., Issue : 5 May, 2016, IJRSML ISSN-2321-2853
3. श्री रामचरित मानस–तुलसीदास, अयोध्याकांड, पृ. 326, संस्करण–द्वितीय सं.2059
4. वही, वही, वही, पृष्ठ–335, वही।
5. रामचरित मानस – बालकांड, पृ. 154, वही, वही
6. रामचरित मानस – अयोध्याकांड, पृ. 295, वही, वही
7. रामचरित मानस – तुलसीदास, 'बालकांड', पृ. 164, वही, वही
8. वही, – वही, वही, पृ. 189, वही, वही।
9. रामचरित मानस – तुलसीदास, अयोध्याकांड, पृ. 443, वही, वही।
10. तुलसी के राम – डॉ.भरत कुमार एन. सुथार, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ऑल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेज, Vol 4, 5 May, 2016, ISSN-2321-2853
11. रामचरित मानस – तुलसीदास, उत्तरकांड, पृ. 738, वही, वही।
12. वही – वही, वही, पृ. 739

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''भोपाल जिल` के कृषि विकास मे ं मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

शोधार्थी :– प्रियंका शर्मा

डॉ. पुष्पलता चौकसे (प्राध्यापक एवं विभागाध्यापक (वाणिज्य विभाग) शासकीय हमीदिया कला एव ं वाणिज्य स्नाकोत्तर महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

1. परिचय/प्रस्तावना
2. शोध का औचित्य
3. शोध कार्य का क्षत्रे
4. शोध अवधि
5. शोध प्रविधियाँ
6. शोध अध्ययन मे ं आने वाली समस्याएँ
7. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ
8. शोध साहित्य समीक्षा
9. ग्रन्थावली
10. सारांश

प्रस्तावना :– उन्नति वर्तमान युग में आर्थिक एवं सामाजिक क` लिये आवश्यक हो गया है कि किसी भी क्षेत्र को किसी ना किसी के माध्यम से विकासशीलता की आरे अग्रसर किया जा सकता है। अर्थात् एक क्षेत्र में विकास करने क` लिए किसी अन्य क्षेत्र का सहारा लने । होता हैं, इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि कृषि क` विकास में मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ मयादित क` महत्व को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये, क्योंकि कृषक द्वारा कवे ल कृषि के उत्पादन के आधार पर किसी नतीज` पर नहीं पहुँचा जा सकता अर्थात्

जब तक की उसे उपभोक्ता तक नहीं पहुँचाया जाता है। कृषि उत्पादन के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक विकास को मापना कठिन कार्य हाते ा हैं। मध्यप्रदेश राज्य सहाकरी विपणन संघ मयादित को सामान्यताः ''मार्कफडे '' के नाम से संबांधित किया जाता है। जो कि अपने आप में लोकप्रिय है। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ मयादित को प्रदेश की सभी सहकारी विपणन समितियो ं में सर्वश्रणे ी माना गया है। जो कि वर्ष 1956 में गठित की गई है। माकर्फ डे मध्यप्रदेश सहकारी समितियाँ अधिनियम 1960 के अन्तर्गत पंजीकतृ सहकारी संस्था के रूप मे ं कार्यरत हैं प्रदश े ा में कार्यरत सभी सहकारी संस्थाआं ` में से सर्वश्रेष्ठ संस्था होन ` क ` कारण माकर्फ डे अपनी सामाजिक जिम्मदे ारिया ` का भी निर्वहन कर रहा है। जिसके फलस्वरूप संस्था की प्राथमिकता, लाभप्रदता क ` अलावा कृषि क्षेत्र में अपनी साख एवं बेहतर सेवाऐं बनाए रखने को हैं। सहकारी विपणन संघ मयादित द्वारा अपनी भूमिका को सफलतापूर्वक निभाते रखते हुए प्रदश े ा के सभी किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आन ` की संभावनाओं को देखा जा सकता है। सहकारी विपणन संघ द्वारा कृषकां को उनके उद्देश्यो को पूर्ण करने में प्रगति प्रदान की जाती है। साथ ही इसे कृषि सबं ंधी उत्पादो ं के वितरण की एक महत्वपूण ं एजेन्सी के रूप म ` पहुचाना जाता है। माकर्फ डे क ` गठन का मख ु य उद्देश्य सहकारी विपणन को बढ़ावा देना एवं उच्च स्तर की कृषि उत्पादों का वितरण करना एवं कृषि उपज का किसानो ं स ` उपभोक्ताओ ं तक पहुँचाना होता हैं।

''मार्कफडे '' द्वारा कृषि कार्य से संबंधित गुणवत्तायुक्त उत्पादन जैसे उर्वरक, बीज, कीटनाशक, कृषि उपकरण विक्रय एवं वितरण करने क ` साथ–साथ न्यूनतम समर्थन मल ू य पर कृषि उपजां ` क ` उपार्जन क ` कार्य भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किये जा रहे हैं। जिनक ` फलस्वरूप सुदूर अंचलों में स्थापित प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों एवं विपणन सहकारी समितियो ं क ` माध्यम से कृषकों को उचित समर्थन मल ू यो ं पर आसानी से गुणवत्तायुक्त कृषि उत्पादन आदान उपलब्ध हो सक। एक शोधार्थी क ` रूप में मरे ` द्वारा यह कहा जा सकता है कि प्रदेश क ` सहकारी क्षेत्र अन्तर्गत कृषि उत्पादन क ` व्यवसाय में माकर्फ डे शीर्ष स्थान पर विधवान है, जो कि कृषको ं क ` हित में विगत 50 वर्षो ं से सफलतापूर्वक कार्यरत हैं। माकर्फ डे द्वारा सर्वपश्र ाम अपना व्यवसाय 19 सितम्बर 1956 में कलु 4.65 लाख की पूंजी से प्रारम्भ किया गया था जो कि वर्तमान में लगभग 21.12 करोड़ से अधिक हो चुका है साथ ही काया ं क ` संचालन हेत ु माकर्फ डे क ` पास भारी मात्रा में याग े य एवं कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मचारी अपनी सेवाआं ` को देने क ` लिए उपलब्ध है। शोधार्थी द्वारा यह भी दर्शाया जा रहा

है कि "माकर्फ डे " अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरको ं का वितरण एवं कृषि उत्पादों का उपाजर्न करता हैं, जिसके फलस्वरूप प्रदशे ा की कृषि उत्पादन क्षमता मे ं बढ़ोतरी क` चलते हुए किसानो ं क` जीवन स्तर मे ं परिवर्तन देखने को मिल रहा है आरै इसमं` "माकर्फ डे " की अहम भूमिका मख्ु य रूप स` परिभाषित होती हैं।

शोध कार्य का औचित्य :– चयनित शोध विषय द्वारा यह बढ़ाने का प्रयास किय जा रहा है कि कृषको ं द्वारा उत्पादित कृषि उत्पादो ं का अधिक स अधिक विक्रय मल्ू य कृषकों को प्राप्त हो सके जिसस` कृषकों क` आर्थिक विकास में वृद्धि हो सक` चूंकि कृषि क` क्षेत्र में अनेक बिचोलिये व्यक्ति हैं, जो कृषकों को अधिक विक्रय मल्ू य प्राप्त करने का लालच देते रहते हैं परन्तु वे कृषकां` को लाभान्वित नहीं करा पाते हैं, अतः विपणन संघ ऐसी संस्था स्थापित की गई है जो कि कृषि के क्षेत्र में कृषकां` क` हित में अपना बहुमूल्य यागे दान देती है और कृषको ं क` आर्थिक विकास में ही वृद्धि नहीं होती है वरन् विपणन संघ को अधिक लाभ होता है जो कि इसकी सेवा क` बदल`में इसे प्राप्त होती है। और साथ ही इसकी आार्थिक स्थिति में भी सुधार होता है। विपणन संघ एवं कृषको ं क` आपसी संबंधों क` कारण एक दूसरे की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेत ु प्रयास करना शोध कार्य का मख्ु य कारण हैं।

शोध कार्य का क्षेत्र :– सम्पूर्ण भारत वर्ष को कृषि प्रधान देश कहा जाता है जिसमें कृषि एवं विपणन संघ क` माध्यम से आर्थिक स्थिति में सुधार का मल्ू याकं न किया जाता है। परन्तु मरे` द्वारा शोध विषय का कार्य करने क` लिए मध्यप्रदेश राज्य को चयनित करते हुए बताया गया है कि प्रदशे ा की आर्थिक स्थिति क` सुधार मे ं कृषि एवं विपणन संघ की भूमिका रही हैं। मध्यप्रदेश मे ं स्थित अधिक से अधिक ग्रामीण क्षत्रे ो ं मं` कृषि उत्पादो ं का कृषको ं तक उचित मल्ू यो पर वितरित करने हेतु विपणन संघ अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है। जिसस` इन क्षेत्रों में कृषि के विकास में वृद्धि होती आ रही है।

शोध की अवधि :–

शोध विषय विगत 10 वर्षो ं (2009–10 से 2018–19) तक अवधि क` आधार पर पूर्ण किया जा रहा है जिसके आधार पर विपणन संघ एवं कृषि उत्पादों क` माध्यम से आर्थिक विकास के मापने की कार्यवाही की जा रही हैं।

शोध प्रविधियाँ :–

शोध कार्य को करने की कार्य विधि को सामान्यताः शोध विधि मे ं शामिल किया जाता है। शोध विधि दर्शाती है कि शोधार्थी द्वारा किया जाने वाला शोध कार्य वास्तविक स्थिति को प्रकट कर रहा है या नहीं, इसके लिए मुख्यताः प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध विधियो ं का प्रयोग किया जा सकता है। प्राथमिक शोध विधि मे ं वे जानकारिया ँ उपलब्ध होती है जो कि प्रथम बार प्रयोग मे ं लाई गई है एवं द्वितीयक शोध विधि मे ं उन जानकारियों को दर्शाया जाता है। जिन्हे ं पहले कहीं प्रयोग मे ं लाया जा चुका है। द्वितीयक शोध विधि के अन्तर्गत जानकारियो ं को मुख्यता शोध विषय से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदनां` एवं अन्य ग्रन्थो ं से प्राप्त किया जाता है एवं प्राथमिक प्रविधि मे ं पूछताछ करते हुए एवं प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त करते हुए कार्यपूर्ण किया जाता हैं। मेरे द्वारा अपने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिये द्वितीयक शोध प्रविधि को प्रयोग मे ं लाया जा रहा है।

शोध कार्य में आने वाली समस्याएँ :–

शोध कार्य को पूर्ण करने में आन` वाली समस्याओ ं म ं मुख्य समस्या कार्य से संबंधित जानकारियों को एकत्रित करना होता हैं, जो कि मरे` द्वारा भी देखी गई हैं, चूकि मरे । शोध कार्य द्वितीयक आकं ड़ो ं पर आधारित है जिन्हे ं एकत्रित करने क` लिए मख ु य रूप से शोध विभाग क` वार्षिक प्रतिवेदनों से प्राप्त की गई है उनके आधार पर यह निर्णय लने । मुश्किल होता है कि प्रतिवेदनों में दर्शाई गई जानकारियाँ वास्तवित है या नहीं, प्रस्तुत आंकड़े सही है या गलत।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1) म.प्र. सहकारी विपणन संघ ''माकर्फ`ड'' द्वारा उपाजिर्त उपज की खरीद और विक्रय म कोइ ` सार्थक अन्तर नहीं है।

2) म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ ''माकर्फ डे '' के लाभ और कलु विक्रय में कोई साथक अन्तर नहीं हैं।

शोध साहित्य की समीक्षा :–

शोध कार्य को पूर्ण करने क` लिये आवश्यक होता है कि शोधार्थी द्वारा जो कार्य किया जा रहा है उससे संबंधित पूर्व में किये गए कार्यो ं की समीक्षा कर ली जाए, जिसका परिणाम संभवता सकारात्मक रूप में ही प्राप्त होगा साथ ही शोध कार्य को पूर्ण करने में कोइ ` त्रुटि का सामना ना करना पड़` और यदि आंकड़ां` क` आधार पर यदि कोइ ` गलत परिणाम सामने आ रहे हैं ता` आकं ड़ो ं को आवश्यकतानुसार सुधारते हुए शोध कार्य को पूर्ण किया जाए। शोध कार्य स` संबंधित समीक्षा को दर्शाने के लिये निम्न साहित्य की सहायता ली जा रही हैं।

शकील उल रहमान (2012), म ं वे सभी गतिविधियाँ शामिल है जो उत्पादकां, किसानों से लके र उपभोक्ताओ ं तक कृषि उपज क` आन्दोलन में शामिल है। इन गतिविधियों मं कृषि उपज की खरीद, भण्डारण परिवहन, वितरण आरै प्रसंस्करण, कृषि उत्पादों का उत्पादन और व्यापार करने क` लिए विपणन व्यवस्था संरचना प्रोत्साहन शामिल है। और जिसस` कृषि क्षेत्र क` भीतर आर्थिक गतिविधि का मार्गदर्शन होता हैं।

शायकर विलास बी. (2017), क` शोध पत्र मे ं भारत में कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नफेर्ड ) का एक अध्ययन कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड़ हैं। लेकिन दिन प्रतिदिन जी. ड़ी.पी. में हिस्सेदारी घट रही है। भारतीय कृषि क` नाम पर कई चुनौतियां का सामना करना पड़ रहा है। जिनमें से कछु मं क्रेडिट ट्रांसफार्ट, इनपुट, मार्केटिंग, वेयर हाउसिंग आदि शामिल हैं। कृषि विपणन किसानों क` लिए महत्वपूर्ण है। नैफेड ने किसानों को कृषि उपज का विपणन करने क` लिए उचित मदद की है। प्रस्तुत पत्र में नैफडे क` अध्ययन, शेयर पूंजी, आरक्षित और अन्य निधियों की वृद्धि सकल लाभ, शुद्ध लाभ और हानि और 2006–07 से 2016–16 तक व्यापार कारोबार पर आधारित है। वर्तमान शोध पत्र में कृषि विपणन के प्रकारो ं और मुद्दों पर ध्यान कोन्द्रित किया गया है। और समस्याओ ं से निपटने के उपाय

किए गए है। यह शोध का भारत में कृषि विपणन की समस्या को हल करने क` लिए कछु उपाय और सुझावों क` सम्पन्न हुआ है। यह सही है कि अगर किसानो ं को बचाया जाता है तो देश बचता हैं।

ग्रन्थावली :–

शोध कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए सभी शोधार्थियां को अनेक पुस्तको, वार्षिक प्रतिवेदनो, प्रकाशित पत्रिकाओं आदि की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से शोध कार्य से संबंधित जानकारियो ं को आवश्यकतानुसार आसानी से प्राप्त किया जा सकता है इसी तथ्य के आधार पर मेरे द्वारा भी निम्न गन्थावलियो ं की सहायता ली जा रही है –

1. विपणन संघ मयादित विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन।
2. कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन।
3. विभिन्न प्रकार के समाचार पत्र।
4. कम्प्यूटर वेबसाईट, नेट आदि।

सारांश :– उपरोक्त शोध पत्र के माध्यम से कहा जा सकता है कि भारत वर्ष एवं मध्यप्रदेश मं` कार्यरत कृषको ं द्वारा जो कृषि उत्पादन किये जाते है उनको उपभोक्ता तक पहुचाने एवं कृषिको ं को उनका उचित मूल्य करवाने मे ं विपणन संघ मर्यादित द्वारा अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है जिसके फलस्वरूप मध्यप्रदेश राज्य की एवं कृषको ं की व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति मे ं सुधार निरन्तर हो रहा हैं।

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ऑनलाईन एवं ऑफ लाईन विपणन में डिस्काउंट ऑफर का उपभोक्ता संतुष्टि पर प्रभाव

दिलीप कुमार कुशवाह एवं डॉ पुष्पलता चौकसे

शोधार्थी, वाणिज्य संकाय, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, वाणिज्य संकाय, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश

किसी साइट को बाजार में एक ब्रांड बनाने में डिस्काउंट ऑफर एक प्रमुख भूमिका निभाता है डिस्काउंट ऑफर ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसी प्रकार लोगों को ऑफलाइन खरीदारी करने के लिए आकर्षित करने में भी डिस्काउंट ऑफर एक प्रमुख भूमिका निभाता है भारत जहां त्योहारों को सबसे शुभ क्षण माना जाता है, डिस्काउंट ऑफर खरीदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जो ग्राहक को अपने उत्पादों को उचित मूल्य पर खरीदने का एक कारण देता है। साथ ही डिस्काउंट ऑफर अधिक ग्राहक लाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि कि उपभोक्ता अपनी खरीदारी के लिए डिस्काउंट ऑफर को कैसे मापते हैं। विशेष रूप से, यह एक वैचारिक मॉडल को आगे बढ़ाता है जो पारंपरिक खरीदारी बनाम इंटरनेट खरीदारी का उपयोग करने के लिए उपभोक्ताओं को प्रभावित करता है। ऑनलाइन और ऑफलाइन खरीदारों की टिप्पणियों का मूल्यांकन यह देखने के लिए किया जा सकता है कि दोनों प्रकार के उपभोक्ताओं की संतुष्टी का स्तर डिस्काउंट ऑफर के द्वारा कैसे किया जाता है। यह अब तक पहचाना नहीं जा सका है कि कौन से कारक ऑनलाइन और ऑफलाइन खरीदारी पसंद को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य ऑफलाइन और ऑनलाइन व्यवसाय में डिस्काउंट ऑफर की तुलना करके उपभोक्ताओं की संतुष्टि के स्तर को ज्ञात करना है जो ग्राहकों को यह तय करने के लिए प्रेरित करते हैं कि ऑनलाइन शॉपिंग करना है या ऑफलाइन ई शॉपिंग के लिए जाना है।

कुंजी शब्द : ऑफलाइन और ऑनलाइन विपणन, उपभोक्ता संतुष्टि, डिस्काउंट ऑफर

शोध का औचित्य –

प्रस्तुत शोधपत्र से यह ज्ञात का प्रयास किया गया है कि ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन में डिस्काउंट ऑफर किस प्रकार उपभोक्ता की संतुष्टि को प्रभावित करता है।

शोध कार्य का क्षेत्र –

आधुनिक अर्थव्यवस्था में विपणन का क्षेत्र प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर तक है। लेकिन मैने अपने शोध कार्य के लिये नरसिंहगढ़ तहसील के क्षेत्र को ही शामिल किया है। इसी प्रकार उपभोक्ता संतुष्टि के संदर्भ में केवल डिस्काउंट ऑफर को ही शामिल किया है।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक समंकों का उपयोग किया गया है । प्रश्नावली के माध्यम से नरसिंहगढ़ तहसील के उपभोक्ताओं से जानकारी एकत्रित की गई है। तद्नुसार समंकों का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है और उसके आधार पर विश्लेषण कर परिणाम निकाले गये हैं ।

समंको का संकलन एवं विश्लेषण

'kks/k leL;k ds v/;;u gsrq mfpr leadks dk p;u ,oa ladyu ds fy, izkFkfed leadks ds ek/;e ls 50 mRrjnkrkvksa ls iz'ukoyh ds ek/;e ls tkudkjh ,df=r dj fo'ys"k.k fd;k x;k gSA

सारणी 1 : उत्तरदाताओं का वर्ग (महिला / पुरुष)

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
महिला	18	36
पुरुष	32	64
कुल	**50**	**100**

आरेख 1 : उत्तरदाताओं का वर्ग (महिला/पुरुष)

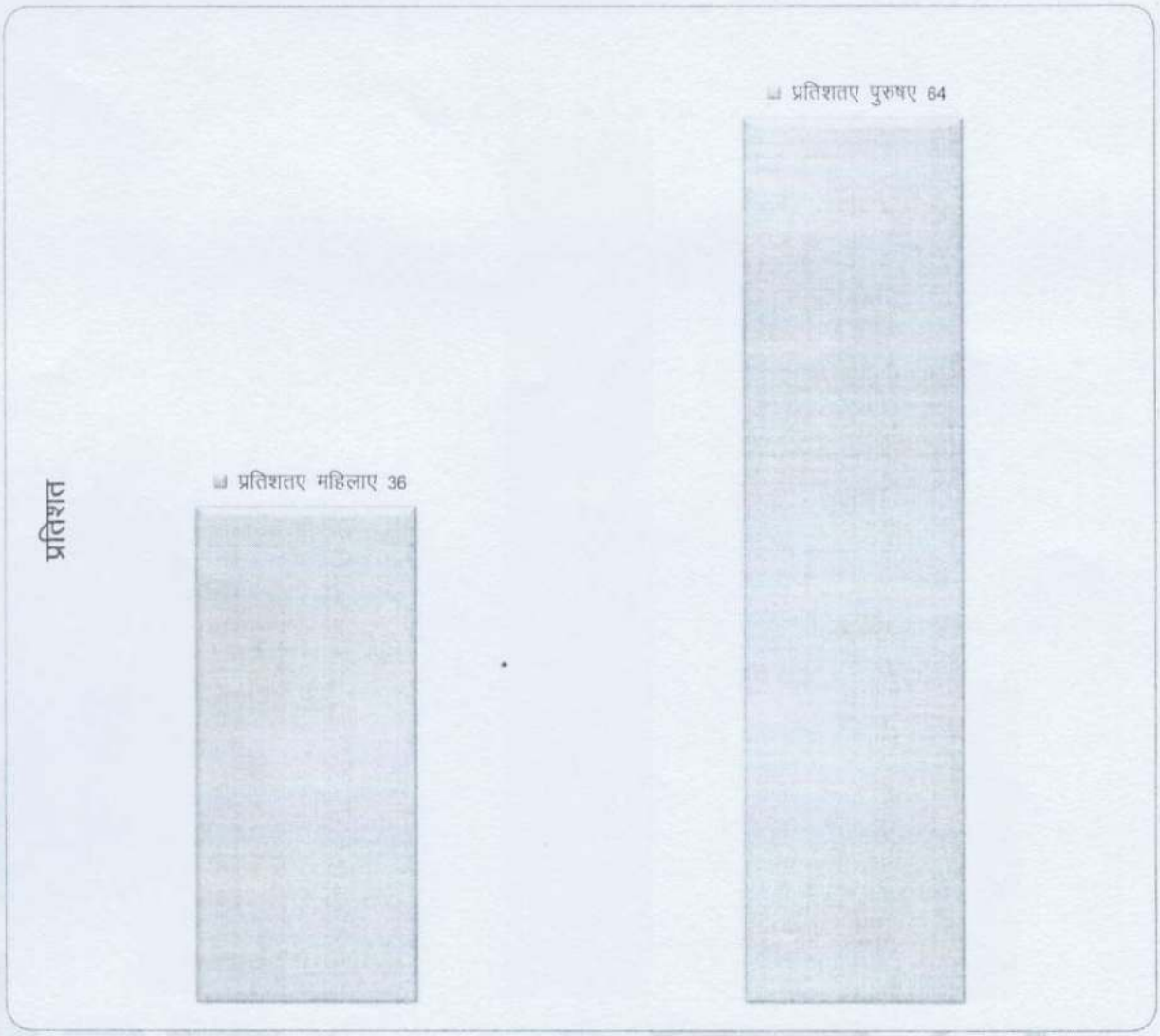

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में से 36 प्रतिशत महिलाएं है और 64 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता है। इससे स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है।

सारणी 2 : उत्तरदाताओं की आयु

आयु	संख्या	प्रतिशत
15 से 18 वर्ष	13	26
18 से 36	27	54
36 से अधिक	10	20
कुल	50	100

आरेख 2 : उत्तरदाताओं की आयु

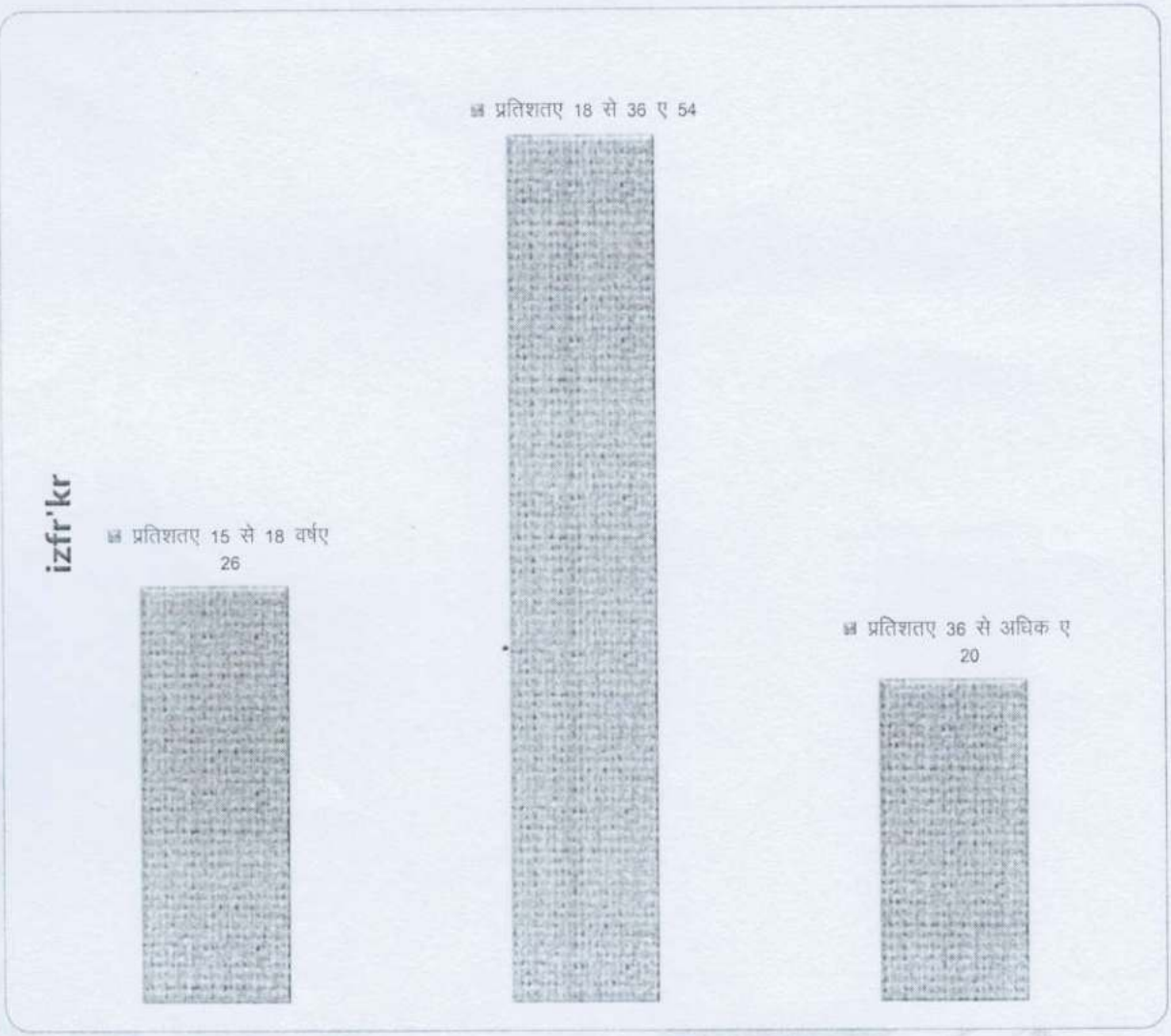

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 54 प्रतिशत उत्तरदाता 18 से 36 वर्ष आयु वर्ग के है 26 प्रतिशत उत्तरदाता 15 से 18 वर्ष आयु वर्ग के है एवं मात्र 20 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिनकी आयु 36 वर्ष से अधिक है

सारणी 3 : उत्तरदाताओं की शिक्षा

शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
स्कूली शिक्षा	12	24
स्नातक	25	50
स्नातकोत्तर	13	26
कुल	50	100

आरेख 3 : उत्तरदाताओं की शिक्षा

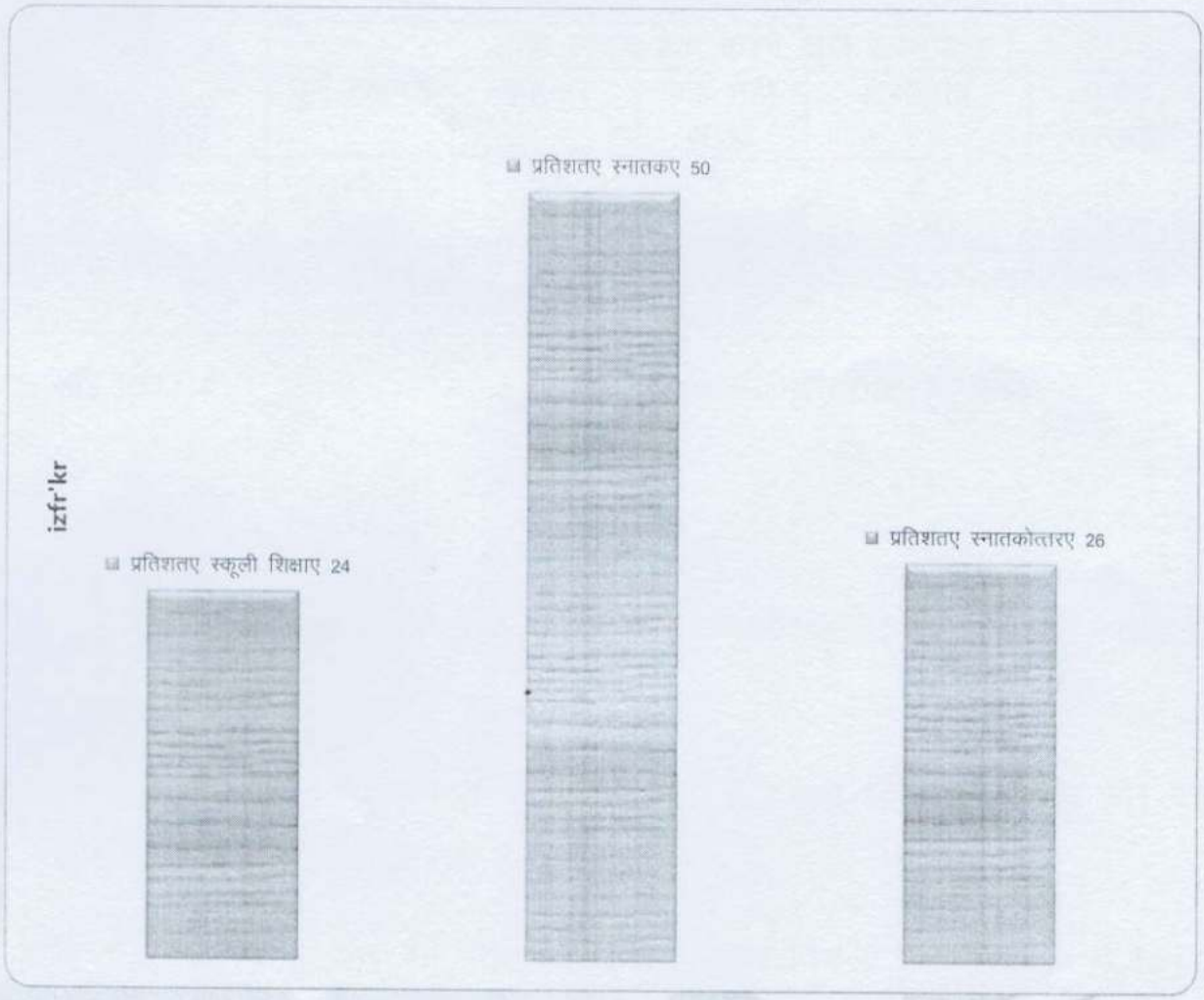

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 50 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त किए हुए है 26 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित है एवं 24 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिन्होंने स्कूली शिक्षा तक अध्ययन किया है।

डिस्काउंट ऑफर से उपभोक्ता संतुष्टि ऑनलाइन विपणन के संबंध में

कारक	ऑन लाइन क्रय करने वाले उपभोक्ता				
	पूर्ण सहमत	सहमत	कह नही सकते	असहमत	पूर्णतः असत्य
त्यौहारों पर	29 ;58:द्ध	11 ;22:द्ध	5 ;10:द्ध	4 ;8:द्ध	1 ;2:द्ध
सामान्य दिनों में	21 ;42:द्ध	8 ;16:द्ध	16 ;32:द्ध	3 ;3:द्ध	2 ;4:द्ध

डिस्काउंट ऑफर से उपभोक्ता संतुष्टि ऑफलाइन विपणन के संबंध में

कारक	ऑफ लाइन क्रय करने वाले उपभोक्ता				
	पूर्ण सहमत	सहमत	कह नही सकते	असहमत	पूर्णतः असत्य
त्यौहारों पर	25 ;50:द्ध	13 ;26:द्ध	7 ;14:द्ध	2 ;4:द्ध	3 ;6:द्ध
सामान्य दिनों में	18 ;36:द्ध	9 ;18:द्ध	18 ;36:द्ध	1 ;2:द्ध	4 ;8:द्ध

स्वतंत्रता स्तर (d.f.) 4 सारणी मूल्य 0.05 पर 9.44

शोध की परिकल्पनाएं

H_{01} ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन में त्यौहारों पर डिस्काउंट ऑफर और उपभोक्ता संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{02} ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन में lkekU; fnuksa esa डिस्काउंट ऑफर और उपभोक्ता संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना H_{01} के χ^2 काई वर्ग परीक्षण द्वारा यह निष्कर्ष निकला है कि Lora=rk Lrj (d.f.) 4 dk सारणी मूल्य 9.44 है जबकि काई परीक्षण का मूल्य (χ^2=2.463, df-4) है जो कि सारणी मूल्य से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई है जिससे यह ज्ञात होता है कि ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन में त्यौहारों पर डिस्काउंट ऑफर और उपभोक्ता संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

परिकल्पना H_{02} के χ^2 काई वर्ग परीक्षण द्वारा यह निष्कर्ष निकला है कि Lora=rk Lrj (d.f.) 4 dk सारणी मूल्य 9.44 है जबकि काई परीक्षण का मूल्य (χ^2=2.0739, df-4) है जो कि सारणी मूल्य से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई है जिससे यह ज्ञात होता है कि ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन में lkekU; fnuksa esa डिस्काउंट ऑफर और उपभोक्ता संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन में आने वाली समस्याएं –

शोध अध्ययन में मुख्य समस्या समंकों के संग्रहण में आती है। मेरा शोध कार्य प्राथमिक समंकों पर आधारित है। कई व्यक्ति समय पर प्रश्नावली नहीं लौटाते जिससे शोध कार्य में अनावश्यक विलंब होता है ।

सारांश –

उपरोक्त शोध पत्र के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन में डिस्काउंट ऑफर उपभोक्ता की संतुष्टि को प्रभावित नहीं करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. गुप्ता एस. पी. एवं जैन एस.सी., विपणन के सिद्धांत, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा 2010
- पीटर जे दानहेर, आइजैक डब्लयू विलसन एवं रॉबर्ट ए डेविस (2013)
- दैनिक भास्कर, भोपाल संस्करण

Turkish Journal of Physiotherapy and Rehabilitation; 32(3)
ISSN 2651-4451 | e-ISSN 2651-446X

ANCIENT ART AND BEAUTY IN INDIA

Ms.Ghousiya Parveen
*Research Scholar
Email-ghousiakhan08@gmail.com

Dr. Alok Bhavsar
*HOD Department of Fine Art,
Hamidia Arts and Commerce College Bhopal
Email- ralokbhawsar@yahoo.com

Symbolism

Since Hindu deities and Buddhist figures all have idealized human bodies creating every indistinguishable from all the others, a group of simply recognizable symbols is important to spot the deities and describe their natures. These symbols opposition.

Their Attributes

Specific symbols accustomed determine the deities. For instance, Hindu deity is dressed sort of a king, with a crown, and royal jeweler. He holds his weapons—the discuss and also the mace—and the univalve he uses to decision his troops to battle. Shiva usually wears the animal product of Associate in nursing ascetic and has artificial, piled-up matted hair with a crescent moon in it. Because the lord of the beasts, he generally has cobras wrapped around him or a little bovid rising from one in all his hands. His weapon may be a spear, and as lord of the dance, he holds the flame of destruction and also the drum of creation. In Shiva temples, he's depicted by the cylindrical linga within the inner sanctum. Durga, the immortal UN agency defeats the buffalo demon, typically has a minimum of eight arms to point out her superior power and holds the weapons given to her by all the opposite deities. She is often shown within the act of killing the buffalo demon or standing on his clay. Ganesha, the jolly elephant-headed god, holds his bowl of sweets in one hand, associate degree axe in another, his broken tusk in another. The Buddha is known by attributes as well as his long earlobes, the tuft of hair between his eyebrows, the bump on his bone, the wheels inscribed on his palms and also the soles of his feet, and also the lions found on his throne.

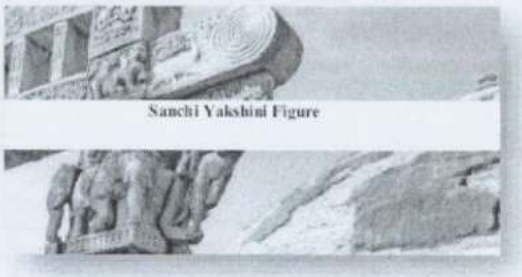

Sanchi Yakshini Figure

Their Vehicles or Mounts

- Agni – Ram. Agni, or the fire **god**, rides upon a ram. ...
- Brahma- Swan. ...
- Durga – Lion. ...
- Ganesha–Mouse. ...
- Indra–Elephant. ...
- Kartikeya –-Peacock. ...
- Lakshmi–Owl. ...
- Saraswati–Swan.

Kartikya on Peacock

The deities' square measure known by the animals they ride. The animal's nature can also reveal their nature, because the mighty Durga rides her tiger and Shiva rides his devoted bull, Nandi. The non-threatening Ganesha, on the opposite hand, features a rat for his vehicle. On an additional symbolic level, every deity's vehicle represents the perfect lover, perpetually centered on the item of their love and devotion, perpetually able to serve.

These were simply some of tales of Indian gods and goddesses with their beloved animals. Vayu (the wind god) rides on a horse. Varuna (the water god) rides the waves on a crocodilian reptile. The watercourse deity Yamuna drifts on a turtle. Bhairava, a manifestation of Shiva, has chosen a dog as his vehicle. The list is nearly endless.

There are quite 330 million gods and goddesses in Hinduism. The tales of them with their individual vahanas have stuffed voluminous books, are kept in numerous quaint libraries across the country. a number of these manuscripts area unit still within the ancient Indian language Sanskritic language, that area unit however to be translated to English and alternative modern Indian languages.

Their Stories

The art of depicts stories of the deities, like the conclusion of Durga over the buffalo demon, or Vishnu's dreaming the creation of the planet whereas he's sleeping on the good cosmic serpent and obtaining a foot massage from his consort, Lakshmi. As in different religions during which giant numbers of the devotees are illiterate, the art is employed to each to show the stories and to cue the devotees of stories they're already accustomed to. Pictures of the Buddha illustrate moments in his life, like his birth, once he left the palace he'd adult up in, once he was a severely haggard ascetic, once Mara sent saltation women and armies to distract him from his meditation, the instant of his job on the planet to witness his achieving enlightenment, his initial sermon, and his death.

Other symbols area unit found in Indian art that are used normally, not related to only one explicit deity:

*Multiple arms indicate that the figure may be a spiritual being, representing their superhuman powers.

*Mudras area unit hand gestures through that the deities communicate with their worshippers. These gestures embrace the "do not fear" gesture, the granting of needs gesture, the worshipful gesture, the gesture of meditation, and therefore the gesture of teaching, among several others.

*Asanas area unit the postures accustomed mirror the mood of the spiritual being – Hindu deities' asanas reveal them in moments of violence, relaxation, or the enduring stance showing their disposition to be at one with the fan. Gautama Siddhartha is typically seen in either a thoughtful posture or standing.

*Half-closed eyes symbolize meditation, accenting trying inward and cultivating religious management.

*A receptor within the middle of the forehead signifies the deity's divine knowledge and power. Most often it seems on Shiva, however it'll even be seen on Hindu deity and alternative deities.

*The lotus represents transcendence and purity, since it grows from the muck at very cheap of a lake, rises up through the water, and blooms higher than the surface.

*Fire represents harmful, purifying power.

*Drums, since they create sound that travels through the air, represent ether, the prime substance from that all creation were derived.

*Snakes, symbols of regeneration and fertility, square measure positive symbols, having none of the association with evil they need in Western art.

1. Architectural Settings

Indian art has been delineating by several because the most esthetical, even the foremost titillating art within the world. (NOTE: make certain that students perceive that "sensuous" suggests that "appealing to the senses," since their understanding of the word is that it forever implies eroticism. Indian art is each sensuous—seen within the stress on ornately embellished forms and plush vegetation—and titillating, with pictures additional specifically suggesting physiological property.)

*Idealized, voluptuous feminine bodies: Yakshis (nature spirits) represent fruitful abundance and bounty and represent the generosity of the gods. The feminine type is predicated on the Vajra (2 headed thunder bolt) or the double drum. Each has full rounded forms connected by a slim waist within the middle. The yaksh is and Hindu goddesses are large-breasted, narrow-waisted,round-hipped. beauties

Stup 1 Easte Torana ,Yakshini and Eliphents,Sanchi

* Idealized, sensual male bodies likewise, with swish, simplified body volumes and really very little muscle definition. Yank students often assume that Hindu Gods area unit feminine just because they're not the "macho men" of Western art from the Greek Archaic amount on.

*Explicit references to pairing symbolize the artistic force inside the universe. Making love (kama) is one amongst the four life aims of Hindus, and is additionally understood as symbolic of human love of and union with the divine, the highest trope in human expertise of union with the deities.

**Temple at Khajuraho*

**Maithunas—loving couples in sexual embrace*

*Abstracted sexual organs (the male linga, the feminine yoni), notably in Shiva temples, symbolize artistic force and therefore the union of the male and feminine principles.

*Twining plant forms, leaves, flowers, vines, as framing devices around sculptures, niches, doorways, and gateways, moreover as integrated into sculptural style and relief sculpture, operate as esthetical symbols of fertility, growth and prosperity. (Here is wherever it's necessary to prompt students that "sensuous" doesn't mean simply "erotic.")

Carving of Sanchi Torana Dwaar

*Profusion of pictures decorative} ornamental patterns (horror vaqui) are typical altogether styles of Indian art and design.

Conclusion

Defined as 'the science and philosophy of fine arts, the topic of aesthetics in Indian art is as Brobdingnagian as it is complicated. With a myriad art and craft forms, that any have variations and versions, India's artistic canvas encompasses unnumbered hues. The aesthetic issues and elements of every genre are so totally different. While not learning associate kind and its incidental literature rigorously, it is not possible to inquire into its aesthetic and creative advantage. The yardstick for literary study, for instance, cannot be used for painting.

However, some ground rules unified all faculties and genres of art, which might be referred to as a universal set of Indian aesthetics. Once rasa rained, the tree of Indian art patterned. Beauty and divinity bloomed on this huge tree. Indian aesthetics united the concepts of creative human creation and divine contemplation, of tradition and innovation, concerning finding God and oneself. The study of Indian aesthetics is so the study of the best truth.

Works Cited:

1. Amita Valmiki, Philosophy, Religion And Art In The Cultural Context Of India In Comparison To Hegelian Aesthetics, (paper presented at The Summer Colloquium At The Department Of Philosophy, Bonn University, Bonn, Germany, 2013), p 1, retrieved in March 2015 from www.science-of-deduction.com
2. Ananda Coomaraswamy, The Dance of Shiva, (Rupa Publications, 2013), pp 20-21
3. Coomaraswamy, Op cit. p 24
4. M A Mehendale, The History and Culture of the India People: The Age of Imperial Unity, (Bharatiya Vidya Bhavan, 7th ed. 2001), p 270
5. Coomaraswamy, Op cit. p 29
6. B N Goswami, The Spirit of Indian Painting: Close Encounters with 101 Great Works 1100-1900, (Penguin Random House Publications, 2014), p 23
7. Tapasvi Nandi, 'The Secret of Rasānubhūti or Art Experience', from Indian Aesthetics and Poetics, edited by V N Jha,(Sri Satguru Publications, 2003), p 37
8. Vidya Niwas Misra, Foundations of Indian Aesthetics, (Surbhi Publications, 2008), p 97
9. Mario Busagli, 5000 Years of The Art of India, (Harry H Abrams – Tulsi Shah Enterprises), p 30
10. Arjun Ranjan Mishra, Indian Aesthetics and Poetics – edited by V N Jha, (Sri Satguru Publications, 2003), pp 86-93
11. S.K. De, 1960. *A History of Sanskrit Poetics*, p. 268. Calcutta: Firma KLM.
12. See Partha Mitter, 2007. *The Triumph of Modernism: India's Artists and the Avant-Garde*, p. 16. London: Reaktion Books Ltd.
13. See John Stratton Hawley's essay 'Bhakti, democracy and the study of religion'. In: *Three Bhakti Voices: Mirabhai, Surdas and Kabir in Their Times and Ours*, (Oxford: Oxford University Press, 2005).
14. Diana Eck, 1981. *Darśan: Seeing the Divine Image in India*, p. 1. USA: Anima Books.

Rajni Gupta Mam.

ISSN 2320 – 4702

An Official International Double Blind Peer Reviewed Referred Recognized Indexed Impact Factor Open Access Monthly Scientific Research Journal of The Global Association of Social Sciences www.thegass.org.in .

THE INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

Vol. 11, No. 2, Feb, 2022

Rs. 600 , $ 60 , € 60 , £ 60

Included in UGC Approved List of Journals, Journal No. 64811, Click here to see and verify.
Indexed in SJIF and Directory of Research Journals Indexing, DRJI, Journal ID : 586.
Scientific Journal Impact Factor Value for 2021 is 7.404, visit at http://sjifactor.com/

2022

Copyright 2012 @ All rights reserved by www.thegass.org.in

भारत में डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की भूमिका

गुप्ता, रजनी

प्राध्यापक, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

ई मेल - v.k.gupta106@gmail.com

सारांश

'डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम निश्चित तौर पर वर्तमान समय की जरूरतों और दूरगामी सोच को ध्यान में रखते हुए विशाल स्तर पर तैयार किया गया संतुलित कार्यक्रम जो दीर्घावधि में साकारात्मक सामाजिक बदलाव की दिशा में उन्मुख होगा। यह कार्यक्रम नागरिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एक प्रयास होगा, जहां सरकार और उसकी सेवाएं नागरिकों के दरवाजे पर उपलब्ध हों और लम्बे समय तक सकारात्मक प्रभाव की दिशा में योगदान करें, 'डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम का उद्देश्य सूचना प्रौद्योगिकी की क्षमता को इस्तेमाल कर भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलना है। साथ ही 'डिजिटल इण्डिया' की राह में भी कुछ चुनौतियां हैं। सबसे बड़ी चुनौती मानव संसाधन की कमी की है। देश में जितना श्रम मानव श्रम सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नियोजित है, उसे कई गुणा बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था भी देश के सामने किसी चुनौती से कम नहीं हैं। नेसकॉम के मुखिया और चन्द्रशेखर का कहना है कि देश की सभी ढाई लाख पंचायतों को ब्रॉडबैंड से जोड़ने के लिए 20,000 करोड़ से ज्यादा का खर्च आ सकता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था व्यापक रूप से प्रभावित हो सकती है। तीसरी चुनौती विभिन्न विभागों के बीच आपसी समन्वय की है। 'डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम को लागू करने के लिए पहले कुछ बुनियादी ढांचा बताना होगा यानी इसकी पृष्ठभूमि तैयार करनी पड़ेगी, साथ ही इसके लिए कुशल श्रम शक्ति की भी जरूरत पड़ेगी जिसे तैयार करना होगा। इस कार्यक्रम को सफलता के शिखर पर पहुँचाना होगा। यह कार्य मुश्किल अवश्य है, लेकिन नामुमकिन नहीं। "डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम का उद्देश्य सूचना प्रौद्योगिकी की क्षमता को इस्तेमाल कर भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलना है।

शब्द कुंजी : *'डिजिटल इण्डिया : सूचना प्रौद्योगिकी, ज्ञान अर्थव्यवस्था, संतुलित कार्यक्रम।*

प्रस्तावना

पारदर्शी, सरल और सुलभ प्रशासन किसी भी समाज, प्रदेश या राष्ट्र के बुनियादी विकास को नए स्तर पर ले जा सकता है। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में यदि प्रशासन की पहुँच हर नागरिक तक समान रूप से हो जाए और अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति भी सामाजिक सुविधाओं का लाभ सुगमता के साथ उठा सके, तो सामाजिक बदलाव की एक सकारात्मक तस्वीर सामने आ सकती है। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी इतना समर्थ है कि यह नागरिकों को घर बैठे तमाम सूचनाएं उपलब्ध करा सकती है और उन्हें उनका अधिकार दिलवा सकती है। यही वजह है कि केन्द्र सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी की इस ताकत से समाज के जीवन स्तर को उन्नत और राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम की शुरूआत की है। इस कार्यक्रम के माध्यम से सरकार ने सम्पूर्ण भारत को डिजिटल करने वाली नई क्रांति का सूत्रपात किया है। समाज के डिजिटल सशक्तिकरण के माध्यम से तैयार होने वाली ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के फलस्वरूप देश का विकास इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। 'डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम से यह उम्मीद की जा रही है कि नागरिकों को सभी सरकारी सेवाओं की उपलब्धता मोबाइल व कम्प्यूटर के माध्यम से रीयल टाइम में सुनिश्चित की जा सकेगी। इस कार्यक्रम में मुख्य फोकस सरकारी गतिविधियों से आमजन के जुड़ाव का सशक्तिकरण करना और पारदर्शी तथा सहभागिता वाले प्रशासन को नया आयाम देना है।

इंटरनेट युग का आरम्भ और विस्तार

लोकतन्त्रात्मक भारत में इंटरनेट आमजन को जागरूक करने की दिशा में एक सेतु का काम कर रहा है। नब्बे के दशक में भारत में अपनी दस्तक देने वाली वैश्विक इन्टरनेट क्रान्ति को 'डिजिटल इण्डिया' की पूर्व पीठिका कहा जा सकता है। 15 अगस्त 1995 को विदेश संचार निगम लिमिटेड (वी.एस.एन.एल.) के माध्यम से पहली बार इंटरनेट सुविधाएं प्रदान की गईं और इसकी सफलता यह रही कि अगले छः महिने में ही 10 हजार से

अधिक लोग इस माध्यम से जुड़ गए। अगले एक दशक में यह अपने पंख इसलिए नहीं पसार सका, क्योंकि उस वक्त नैरोबैंड कनेक्शन के जरिए डायल–अप से इंटरनेट सुविधाएं मिलती थी और इसकी गति कम थी। वर्ष 2004 में देश में ब्रॉडबैंड नीति बनाई गई, जिसके तहत एक न्यूनतम डाउनलोड गति का निर्धारण किया गया। इसके पश्चात् 56 किलोबाइट प्रति सेकेंड की न्यूनतम गति से चलने वाला इंटरनेट 256 किलोबाइट प्रति सेकण्ड की न्यूनतम गति से दौड़ने लगा। इस बदलाव से देश में इंटरनेट सेवाओं का विस्तार हुआ और वर्ष 2010 में 3G तथा उसके पश्चात् 4G सेवाओं ने देश के आमजन तक इंटरनेट सेवाओं की आसान पहुँच को सुनिश्चित किया। इन्टरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014 के अंत तक देश में 30 करोड़ से ज्यादा लोगों तक इंटरनेट की पहुँच है और उपभोक्ताओं की संख्या के मामले में भारत दुनिया में अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है।

वायरलैस इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क का विस्तार

कभी तारों के सहारे अंतिम छोर तक पहुँचने वाला इंटरनेट कनेक्शन आज उपभोक्ताओं को बेतार माध्यम से मिल रहा है। स्मार्टफोन की पहुँच अब ग्रामीण उपभोक्ताओं तक होने लगी है और वे भी आसानी से इंटरनेट सुविधाओं के साथ जुड़ गए है। 20 फरवरी 2015 तक के आँकड़ों को देखा जाए, तो देश में कुल मोबाइल फोन उपभोक्ताओं की संख्या 96 करोड़ से अधिक है। कुल जनसंख्या के हिसाब से यह आकड़ा 77.50 प्रतिशत है और इस आधार पर भारत चीन के बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर है। यदि स्मार्टफोन की बात की जाए तो वर्ष 2013 में गूगल के 'आवर मोबाइल प्लेनेट' ने स्मार्टफोन की पहुँच को लेकर विभिन्न देशों की एक सूची जारी की थी, जिसमें भारत 16.8 प्रतिशत के साथ 45 वाँ स्थान पर था। इसके बाद देश में स्मार्टफोन क्रान्ति ने नया स्वरूप ले लिया। सही मायने में 'डिजिटल इण्डिया' के उद्देश्यों की पूर्ति इसी क्रान्ति के माध्य से हो सकती है।

'डिजिटल इण्डिया' और नागरिकों को विशिष्ट पहचान

डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम के अन्तर्गत कई महत्वपूर्ण विषय शामिल है। इसके तहत प्रत्येक नागरिक के लिए उपयोगी सेवा मुहैया कराने के लिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्टर का सृजन किया जाएगा। ऐसी बुनियादी सेवाओं के बूते देश ज्ञान के एक ऐसे भविष्य की और

उन्मुख होगा, जहां प्रशासन और सेवा हर मांग पर उपलब्ध होगी। ऐसे में प्रशासन की जवाबदेही और पारदर्शिता का सवाल काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भ्रष्टाचार को मिटाना भी अर्थव्यवस्था के लिए एक अहम मुद्दा है। इसी सोच के साथ बहुउद्देशीय राष्ट्रीय पहचान पत्र यानी आधार कार्ड को भी डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम के साथ जोड़ा गया है। आधार कार्ड प्रत्येक नागरिक को 12 अंको की एक विशिष्ट संख्या उपलब्ध कराता है। यह संख्या, भारत में कहीं भी व्यक्ति की पहचान और पते को निर्धारित करती है। आधार संख्या प्रत्येक व्यक्ति की जीवन भर की पहचान है। आधार संख्या से उन्हें बैकिंग, मोबाइल फोन कनेक्शन और सरकारी व गैर–सरकारी सेवाओं की सुविधाएं प्राप्त करने में सुविधा मिलती है। यह सरल ऑनलाइन विधि से सत्यापन योग्य है। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 'पहल' योजना के अंतर्गत गैस सब्सिडी जैसे अनुदान सीधे ही उपभोक्ता के बैंक खाते तक पहुँच रहे हैं। आधार संख्या की इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम के तहत ई–लॉकर एवं अन्य सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए भी आधार संख्या का होना आवश्यक है। ऐसे में आधार संख्या डिजिटल इंण्डिया की संकल्पना को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित हो रही है।

डिजिटल इंडिया और वित्तीय समावेशी योजनाएं

गत वर्ष अगस्त में लागू की गई 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' का उद्देश्य भारत के नागरिकों को बुनियादी वित्तीय सेवाएं जैसे बैंक खाते और डेबिट कार्ड मुहैया कराना है। वित्तीय समावेशन के राष्ट्रीय मिशन को आगे बढ़ाने के लिए यह योजना शुरु की गई। योजना आर्थिक निरंतरता बढ़ाने और जनता को वित्तीय सेवाएं जैसे बैंक जमा खाते, कर्ज और बीमा प्रदान करने के लिए एक साधन के तौर पर तैयार की गई है। यदि इसकी मूल भावना को देखा जाए, तो यह डिजिटल इंडिया के लक्ष्यों को पूरा करती दिखाई देती है। 'मेरा खाता भाग्य विधाता' के आदर्श वाक्य के साथ शुरु की गई इस योजना में भारतीय समाज में गरीब वर्ग के लिए सब्सिडी सुरक्षित करना, ओवर ड्राफ्ट सुविधा और उद्देश्य सन् 2010 तक 7.5 करोड़ परिवारों तक पहुँच बनाना है। यह योजना सरकारी कार्यालयों में किसी भी रूप में मौजूद भ्रष्टाचार से लड़ने के एक हथियार के तौर पर उपयोग के लिए बनी है। भारत की अधिकतर जनता के बैंक खाते होने पर सरकार की ओर से किसी भी प्रकार की राशि सीधे उनके खाते में ट्रांसफर की जा सकेगी, जिससे रिश्वत के मामलों पर

काबू पाया जा सकेगा। इस प्रकार देखा जाए, तो यह योजना 'डिजिटल इण्डिया' के सपने को साकार करने में सहयोगी है। इस तरह की योजनाओं के पीछे केन्द्र सरकार की सोच है कि व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं का सीधा फायदा आज जनता तक पहुँचे और साथ ही तकनीक के इस्तेमाल से ऐसा वातावरण तैयार हो सके, जो आमजन तक प्रशासन की पहुँच को सुनिश्चित करे। 'मेक इन इण्डिया' कार्यक्रम को मजबूत बनाने में इस तरह की योजनाओं का अच्छा योगदान साबित होगा।

डिजिटल इंडिया : 9 प्रमुख स्तंभ

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के नौ प्रमुख स्तंभों की बात की जाए, तो इनमें ब्रॉडबैंड हाइवेज सबसे प्रमुख है। सामान्य तौर पर ब्रॉडबैंड का मतलब दूरसंचार से है, जिसमें सूचना के संचार के लिए आवृत्तियों के व्यापक बैंड उपलब्ध होते है। इस कारण सूचना को कई गुणा तक बढ़ाया जा सकता है और जुड़े हुए सभी बैंड को विभिन्न आवृत्तियों या चैनलों के माध्यम से भेजा जा सकता है और जुड़े हुए सभी बैंड को विभिन्न आवृत्तियों या चैनलों के माध्यम से भेजा जा सकता है। इसके माध्यम से एक निर्दिष्ट समय सीमा में वृहत्तर सूचनाओं को प्रेषित किया जा सकता है। ब्रॉडबैंड हाइवे निर्माण से अगले तीन वर्षो के भीतर देशभर की ढाई लाख पंचायतों को इससे जोड़ा जाएगा और लोगों को सार्वजनिक सेवाएं मुहैवा कराई जाएंगी।

डिजिटल इण्डिया

डिजिटल इण्डिया के 9 स्तंभ

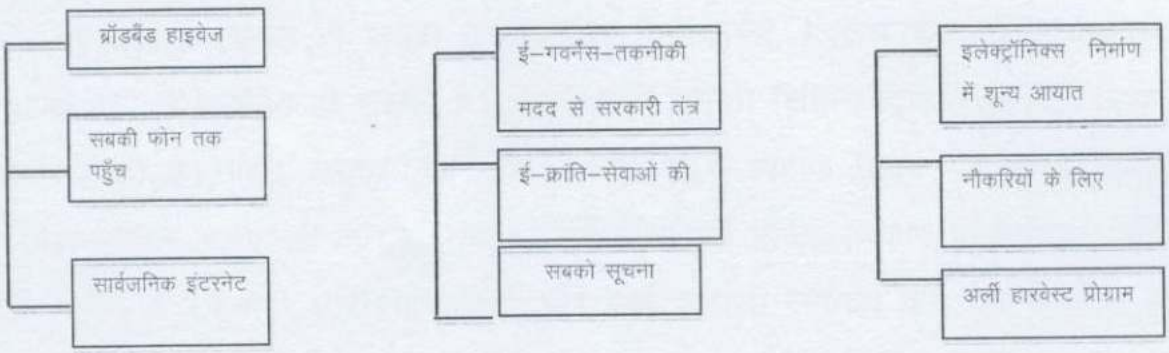

'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम की सफलता इस तथ्य में निहित है कि भारतीय ग्रामीण आबादी की इस तरह की सेवाओं का पूरा लाभ ले सके। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए देश के 55,000 गावों में अगले पांच वर्षो के भीतर मोबाइल संपर्क की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए 20,000 करोड़ के यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (यूएसओएफ) का गठन किया गया है। इससे ग्रामीण उपभोक्ताओं के लिए इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग के इस्तेमाल में आसानी होगी।

प्रौद्योगिकी के जरिये प्रशासन को जवाबदेह और संवेदनशील बनाने की दिशा में सूचना प्रौधोगिकी का इस्तेमाल करते हुए बिजनेस प्रोसेस री–इंजीनियरिंग के ट्रांजेक्सन में सुधार किया जाएगा। विभिन्न विभागों के बीच आपसी सहयोग और आवेदनों को ऑनलाइन ट्रैक किया जाएगा। इसके अलावा, स्कूल· प्रमाण पत्रों, वोटर आइडी काड्र्स का जरूरत के अनुसार ऑनलाइन इस्तेमाल किया जा सकेगा।

'डिजिटल इण्डिया : राह में चुनौतियाँ

जब भी किसी क्रांति का सूत्रपात होता है, तो इसकी सफलता की राह में कई चुनौतियाँ भी होती हैं। 'डिजिटल इण्डिया' की राह में कुछ चुनौतियों होगी। सबसे बड़ी चुनौती मानव संसाधन की कमी की होगी। देश में जितना मानव श्रम सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नियोजित है, उसे कई गुणा बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था भी देश के सामने किसी चुनौती से कम नहीं। नेसकॉम के मुखिया और चंद्रशेखर का कहना है कि देश की सभी ढ़ाई लाख पंचायतों को ब्रॉडबैंड से जोड़ने के लिए 20,000 करोड़ से ज्यादा का खर्च आ सकता हैं, जिससे देश की अर्थव्यवस्था व्यापक रूप से प्रभावित हो सकती है। तीसरी बड़ी चुनौती विभिन्न विभागों के बीच आपसी समन्वय की है। केन्द्र सरकार का दावा है कि इतने व्यापक पैमाने पर इससे विशाल कार्यक्रम पहले कभी नहीं चलाया गया। इसमें केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभाग एक–दूसरे के सहयोगी और सहभागी हैं और उन्हें आपसी समन्वय कर इस कार्यक्रम को सफलता के शिखर पर पहुँचाना होगा। यह मुश्किल अवश्य है लेकिन नामुमकिन नहीं।

निष्कर्ष

किसी भी राष्ट्र के समावेशी विकास के लिए आवश्यक है कि ऐसी कोई भी सामाजिक उत्थान की योजना समाज के निर्बल और अपवर्जित लोगों की आशाओं को उड़ान दे, ज्ञान वर्धन और प्रतिभा–कौशल के विकास के अवसर दे, जिससे वे अपने जीवन स्तर को बेहतर करने में सक्षम बनें और देश की तरक्की का हिस्सा बनें। यदि सभी बच्चों को शिक्षा मिले, सभी को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो और पात्रता अनुसारिक लाभ बिना किसी भेदभाव भ्रष्टाचार या मनमानी के प्राप्त हो, तो आदर्श राष्ट्र की दिखाई देगी। सरकारी तंत्र की जवाबदेही और पारदर्शिता भी बढ़ेगी। 'डिजिटल इण्डिया' कार्यक्रम निश्चित तौर पर वर्तमान समय की जरूरतों और दूरगामी सोच को ध्यान में रखते हुए विशाल स्तर पर तैयार किया गया संतुलित कार्यक्रम है, जो दीर्घावधि में सकारात्मक सामाजिक बदलाव की दिशा में उन्मुख होगा। यह कार्यक्रय नागरिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एक प्रयाप्त होगा, जहां सरकार और उसकी सेवाएं नागरिकों के दरवाजे पर उपलब्ध हों और लम्बे समय तक सकारात्मक प्रभाव की दिशा में योगदान करें। 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम का उद्देश्य सूचना प्रौद्योगिकी की क्षमता को इस्तेमाल कर भारत को, डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलना है।

संदर्भ

1. Sursh K. Chouhan, T.A.V. Murthy. "Digital divide and India" (PDF), Shodhganga@ INFLIBNET Centre. P. 384. Retrieved 20 June 2012.

2. http://www.trai.gov.in/WriteReadData/Recommendation/Documents/Recommendation81210.pdf

3. http://gadgets.ndtv.com/internet/news/india-to-have-second-Iargest-internet-usr-base-by-year-end-iamai-622921

4. https://en. wikipedia.org/wiki/List_of_countries_by_number_of_mobile_phones_in_use

5. https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_countries_by_smartphone_penetration

6. pib.nic.in/archieve/others/2014/aug/d2014082010.pptx.

7. http://www.ndtv.com/india-new-india-to-connect-2-5-lakh-panchayats-throughbroadband-582902

***

11

A STUDY ON FINANCIAL EFFICIENCY ANALYSIS WITH REFERENCE TO MRF LTD

Neha Raghuwanshi
Research Scholar,
Govt. Hamidia Arts and Commerce Collage,
Bhopal

Pushpalata Chouksey
Head, Department of Commerce,
Govt.Hamidia Arts and Commerce Collage,
Bhopal

Abstract:

The Tyre industry of India is a flourishing sector of the economy. The MRF Ltd. is the foremost leading Tyre manufacturing company of India and amongst the Top Tyre manufacturer in the world. The key objective of this study is to analyze and elucidate the financial statements of the company with a motive to shed a light on the company's financial performance and efficiency of managerial decisions. Financial Ratio analysis helps to examine the firm's financial resources to its disposal and revenue with an intend to provide details about company's financial efficiency and potentials. The study is based upon the foundation of strategically inter-linking the relation of the financial resources of the company with their effective utilization to earn revenue. This study is focuses on computing the financial performance of MRF Ltd, the leading player of Indian Tyre industry. For the purpose of evaluating the financial efficiency performance three important ratios- Total Assets Turnover Ratio, Fixed Assets Turnover Ratio and Capital Employed Turnover Ratio are taken into account for determination. This study covers the time period of Five years from 2015-16 to 2019-20. The desire of the study is to measure and evaluate financial efficiency of the company during the specific time period.

Keywords- Financial efficiency, financial statements, Turnover ratios, MRF Ltd.

Introduction:

The Tyre industry of India is one of the most dynamic markets in the world. The Indian Tyre industry is predicted to be grow further due to cheaper availability of raw material (Rubber), introduction of innovative technologies and continuously increasing demand from automobile sector etc. the Indian Tyre industry is an evolving sector of the economy due to the constantly increasing demand of Tyre for both domestic sales and export. After China, Europe and US, India is considered to be fourth largest market of Tyre in the world. Madras Rubber Factory Ltd. (MRF Ltd.) is an Indian origin multinational Tyre manufacturing company that produces extensive range of Tyres and ranked amongst Top20 Tyre manufacturer in the world. For the year ended March 2020, MRF Ltd. achieved a sale of 15914.25 Cr. as against of sale of 15169.00 Cr. in FY 2018-19. The company has reported an operating profit of 2660.91 Cr. and Net profit of 1394.98 Cr. in FY 2019-2020.

Finance is the important component of every business entity which require careful and effective utilization in order to increase the productivity and potential growth opportunities of any organization. The examination and interpretation of data available in the Financial Statements with intend to establish a strategic and logical inter-relationship between them, in order to ascertain financial strengths and weaknesses of an organization is known as financial statement analysis or financial analysis.

Ratio analysis is one of the important tools to analyze and interpretate the financial statements. Ratio analysis is a quantitative analysis technique used to analyze the various aspects of a company's financial performance

such as efficiency, liquidity, profitability and solvency. Financial efficiency ratio analysis facilitates to determine the ability of a company to effectively use its resources such as Assets, Capital, Stock, Debtors and Working capital to raise sales and generate incomes. In order to analyze the overall financial efficiency performance of a firm, financial efficiency ratio provide help to describe the financial efficiency performance based on various Turnover Ratios of MRF Ltd.

Review of Literature:

Seyfettin Unal, Rafet Aktaº and Sezgin Acikalin (2007) in there research work titled "A Comparative Profitability and Operating Efficiency Analysis of State and Private Banks in Turkey", presented a comparative performance analysis between state and private owned commercial banks of Turkey over the time period of 10 years between year 1997-2006. In this study they focus on profitability and operational efficiency to compare the performance of Government and private banking in Turkey. They used statistical measures Mean and Standard Deviation to test their Hypothesis.

Sumarti (2020) have made a study on "Efficiency Analysis of Firm Financial Performance: Case Study of Pt. Unilever Indonesia", presented an overview on the relationship between financial profitability and liquidity of PT. Unilever Indonesia. This study focuses on analysing financial profitability and liquidity with an intend to measure the overall efficiency of the company. This study covers the time period of four years from 2013-14 to 2016-17.

Swati Chauhan (2021) in her research paper titled"Measuring Financial Efficiency and Ranking of Indian MFIs: An Analysis using DEA vs PCA", give a review on financial efficiency of 46 NBFC-MFIs for the time period of 2009-10 to 2015-16. In this study efficiency are calculated on various Input-Output model specifications by using Data Envelopment Analysis (DEA).

Objective of the Study:

The following are the major objectives of the study-

1. To study the current status of financial structure and financial performance of MRF Ltd. in Tyre industry in India.
2. To analyse the financial efficiency performance of MRF ltd.
3. To provide information to fill the information gap which justify the requirement of this study.
4. To provide findings, necessary suggestions and recommendations on the basis of conclusion drawn after the study.

Research Methodology:

This study is a descriptive type of research as it describes a particular aspect of research issue. The data have to be used to elicit necessary information for carrying out the object of the study is based on secondary sources and collected from various sources including published papers, journals, magazines, several published annual reports and financial reports of MRF Ltd. of different years and from various other websites. The study covers the time period of five years from 2015-16 to 2019-2020. Analytical tool like ration analysis and statistical tools like Mean, tables and graphs are used in the study.

Analysis of Data:

Ratio analysis is an important tool used to help a business in assessing their financial standing. Ratio analysis helps a firm to determine its financial health in terms of strengths and weaknesses of the business. Financial ratios can be used for the purpose of taking important decisions regarding the position of business, for making future plans and forecasting by the way of budgeting. Ratio analysis also facilitates inter-firm comparison. Ratio analysis not only shows the financial standing of the entity but also helps in evaluating operational efficiency. The financial ratios are categories into various categories based on the uses, objectives and financial statements. The major

category of ratio includes- Profitability ratios, Liquidity ratios, Solvency ratios and Turnover ratios.

Turnover Ratios- These ratios are also known as 'Activity Ratios', 'Performance Ratios' and 'Efficiency ratios'. The main objective to calculate these ratios is to assess a firm's efficiency in employing its assets and capital. These ratios provide help to evaluate the velocity with which resources are converted into sales. These ratios are used to measure the work performance of the enterprise and effectiveness of managerial decisions. Turnover Ratios are calculated to determine how well resources available at the disposal of the firm are being used. Efficiency ratios are useful to measure efficiency of an organization in utilizing its resources to earn its revenue. The figures of disposal are compared with Assets (both Fixed and Total Assets) and employed capital, in order to determine the level of optimization with which a firm used its resources to achieve sales. These ratios represent a strategic inter-relationship between a firm's assets and capital with the revenue generated through them. A higher Turnover ratio is considered to be better as it reflects the efficiency of a firm with which it uses its resources at its disposal.

1. Total Assets Turnover ratio: The Total Assets Turnover ratio matches the Total assets of a firm with its sales revenue. This ratio indicates a relationship between Net Sales and Total Assets of the company.

$$\text{Total Assets Turnover Ratio} = \frac{\text{Net Sales}}{\text{Total Assets}}$$

Table 1: Total Assets Turnover Ratio

(Rs. In Crores)

Year	Net Sales	Total Assets	Ratio
2015-16	22829.61	12809.11	1.78
2016-17	14863.24	14959.62	0.99
2017-18	15317.82	16301.80	0.94
2018-19	15769.00	18227.68	0.87
2019-20	15914.25	19154.11	0.83
Mean	16938.78	16290.46	1.04

Fig 1: Net Sales to Total Assets

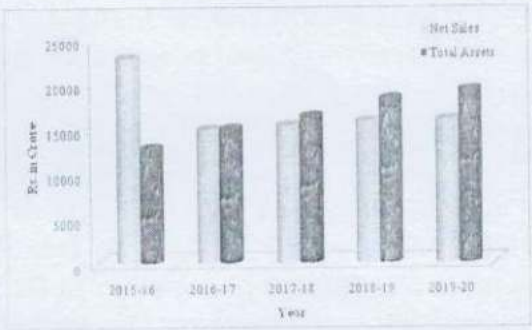

2. Fixed Assets Turnover ratio: The Fixed Assets Turnover Ratio shows the intensity with which Fixed Assets are converted into Sales. This ratio establishes a relationship between the Net Sales and Fixed Assets of the company.

$$\text{Fixed Assets Turnover Ratio} = \frac{\text{Net Sales}}{\text{Fixed Assets}}$$

Table 2: Fixed Assets Turnover Ratio

(Rs. In Crores)

Year	Net Sales	Fixed Assets	Ratio
2015-16	22829.61	5643.14	4.05
2016-17	14863.24	6321.31	2.35
2017-18	15317.82	7136.68	2.15
2018-19	15769.00	8154.51	1.93
2019-20	15914.25	10555.28	1.51
Mean	16938.78	7562.18	2.24

Fig 2: Net Sales to Fixed Assets

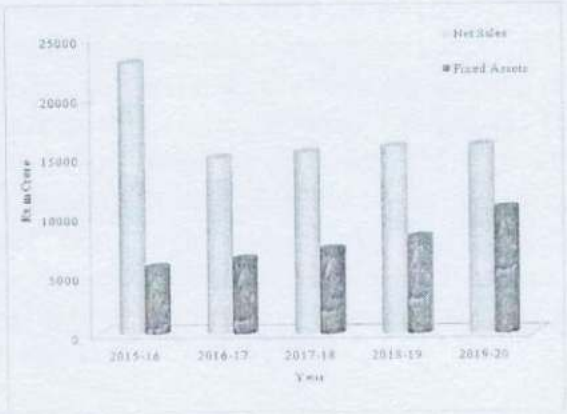

3. Capital Employed turnover Ratio: Capital Employed Turnover ratio is calculated to measure the efficiency of a company in utilizing its employed capital with reference to sales rev-

enue. This ratio is helpful to determine a connection between the employed capital of the company and revenue generated out of it.

$$\text{Capital Employed Turnover Ratio} = \frac{\text{Total Sales}}{\text{Average Capital Employed}}$$

Table 3: Capital Employed Turnover Ratio

(Rs. In Crores)

Year	Total Sales	Average Capital Employed	Ratio
2015-16	22829.61	8561.38	2.67
2016-17	14863.24	10208.89	1.46
2017-18	15317.82	11118.39	1.38
2018-19	15769.00	12272.34	1.28
2019-20	15914.25	13384.91	1.19
Mean	16938.78	11109.18	1.52

Fig 3: Total Sales to Average Capital Employed

Conclusion:

The motive of the study was to assess the effectiveness of the company in utilizing its resources to raise revenue from sales. The study forms a connection between the resources of the company to sales achieved out of them. The analysis made through Turnover ratio analysis to measure the financial and operational efficiency as the part of this research work provides the following findings:

The Total Assets Turnover Ratio of MRF Ltd. was the highest for the year 2015-16 as (1.78) in comparison to other financial year, which reflects the efficiency of the company in utilizing its total assets to raise income most efficiently in this particular year. On the other side, this ratio of the company was the lowest for the year 2019-20 as (0.83), which reveals the company's inefficiency in using the total assets least effectively to yield revenue in this particular year. The Total Assets Turnover ratio of the MRF Ltd. shows the decreasing trend during the study period indicates that the company need to pay attention towards more optimal utilization of its total assets to increase revenue out of them.

The Fixed Assets Turnover Ratio of MRF Ltd. was the highest for the year 2015-16 as (4.05) in comparison to other financial year, which reveals the efficiency of the company in utilizing its fixed assets to raise income most efficiently in this particular year. As against, this ratio of the company was the lowest for the year 2019-20 as (1.51), which reflects the company's inefficiency in using the fixed assets least effectively to earn revenue in this particular year. The Fixed Assets Turnover ratio of the MRF Ltd. shows the decreasing trend during the study period indicates that the company should require to be more focused towards better utilization of its fixed assets toescalate the income from them.

The Capital Employed Turnover Ratio of MRF Ltd. was the highest for the year 2015-16 as (2.67) in comparison to other financial year, which shows the efficiency of the company in utilizing its employed capital to raise income most efficiently in this particular year. On the other hand, this ratio of the company was the lowest for the year 2019-20 as (1.19), which reveals the company's inefficiency in using the employed capital least effectively to yield revenue in this particular year. The Capital Employed Turnover ratio of the MRF Ltd. shows the decreasing trend during the study period indicates that the company need to give more concentration towards utilizing its employed capital more efficiently to yield better revenue out of them.

References:

1. "A Comparative Profitability and Operating Efficiency Analysis of State and Private Banks in Turkey" (SeyfettinUnal ,RafetAktaº and SezginAcikalin) (2007) https://www.businessper

spectives.org/images/pdf/applications/publishing/templates/article/assets/1914/BBS_en_2007_03_Unal.pdf

2. EFFICIENCY ANALYSIS OF FIRM FINANCIAL PERFORMANCE: CASE STUDY OF PT. UNILEVER INDONESIA (Sumarti) (2020) http://ejournal.uin-suka.ac.id/febi/ekbis/article/view/1204/712

3. Measuring Financial Efficiency and Ranking of Indian MFIs: An Analysis using DEA vs PCA (Swati Chauhan) (2021) https://www.proquest.com/openview/d613e1fdcd5e78cbf7ce47572da3f923/1?pq-origsite=gscholar&cbl=28202

4. https://www.capitalmarket.com/Company-Information/Financials/Profit-and-Loss/MRF-Ltd/391

⌘⌘⌘

12

An innovation in library services is the need for libraries in the new era for the survival of the fittest

Dr. Sanjay Shenmare
Librarian,
Bhausaheb Bhore Shivshakti Mahavidyalaya
Babhulgaon, Dist. Yavatmal

****

Abstract:

Knowledge is presently the main resource for development. With the emergence of the computer and web technologies, especially the World Wide Web internet has opened up a wholly new medium for providing new improved information services and resources for the library users. This paper discusses what are the web-based library services, their features, advantages, and disadvantages. Different web-based library services i.e., e-mail services, library website, web OPAC, ask a librarian, library app, library blog, library e-newsletter, Library channel, special e-section, remote access to library resources, digital access on mobile, WhatsApp, and Telegram services, online counseling, online ordering of reading materials, various e-literacy modules and so on. The main mission of libraries is to offer equality of access to information for every citizen. This paper presents a range of relevant and useful innovative technologies to implement at the library.

Keywords: Innovations, e-administration, e-management, etc.

Introduction:

Libraries have continued to evolve and adapt their services to thrive in a world of constant change. Innovation is seen as a positive and critical force in the success of organizations, and libraries are no exception. Libraries have embraced innovation, seeing an opportunity to redefine their role and relevance. Motivated by the desire to better serve and meet the needs

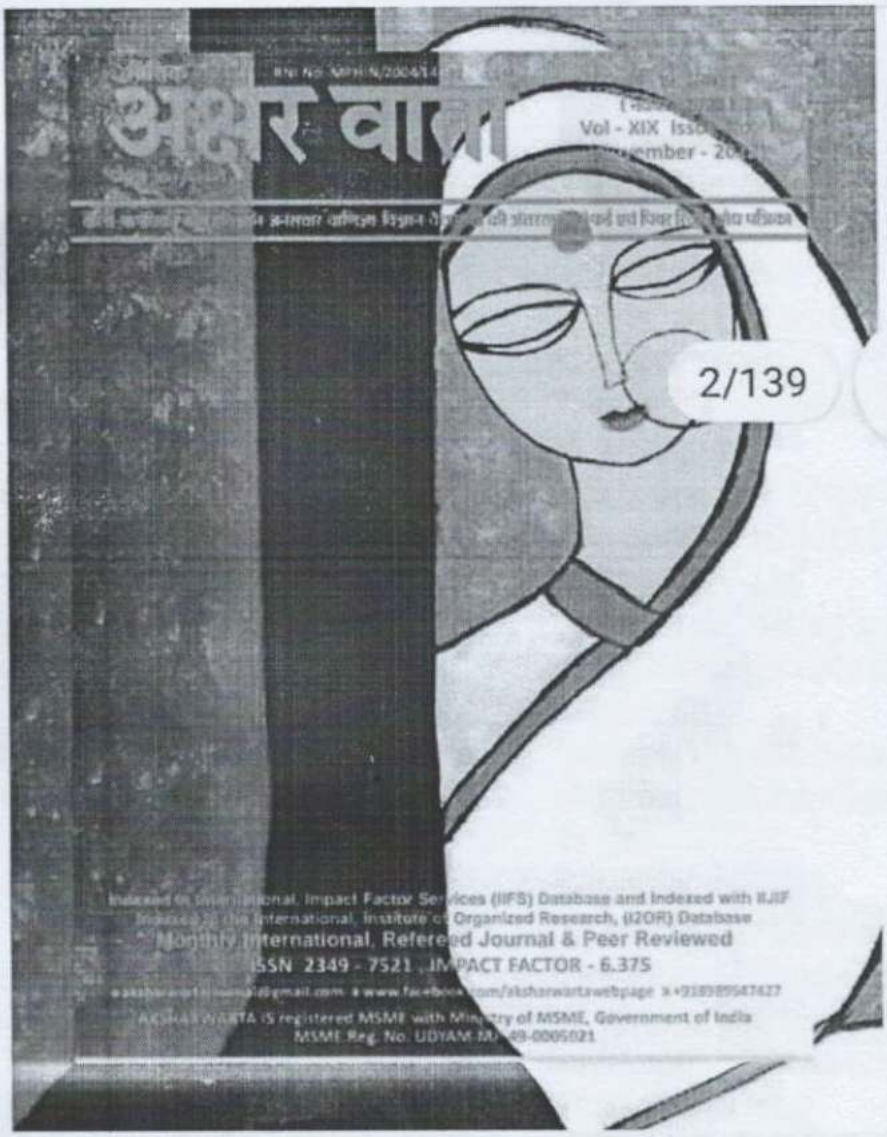

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्य 100/- रुपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-19 अंक-1, नवंबर - 2022
Vol - XIX, Issue No. I
November - 2022
Impact Factor - 6.375
aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक- डॉ. मोहन बैरागी
संपादक मंडल :-
डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. ललित रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (पुणे)
प्रो. प्रजापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा
सहायक सम्पादक :-
डॉ.भैरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति
डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे),
श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),
डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर
गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस),
प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरु), प्रो. अब्दुल अलीम
(अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली),
डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई),
डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन
सह संपादक
डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांत समाधिया
(उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रभु चुघाक
(राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन
व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात),
प्रो. डॉ. किरण ग्रोवर (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये। ● हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या यूनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ● अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यू रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ● Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:- Union Bank of India,

Account Holder - Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430

अनुक्रम

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया का बढ़ता प्रभाव
डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा 07

» "सामाजिक उपेक्षा-अपमान को झेलते किन्नरों के जीवन का यथार्थ" (उपन्यासों के संदर्भ में)
प्रखर 12

» भूमंडलीकरण और हिन्दी कविता
सुभाषचन्द्र गुप्त 15

» 'खिड़की से झांकता चाँद' में प्रेम और संघर्ष
नेमी चन्द कुम्हार, डॉ. विवेक शंकर 20

» 'बसंत कुमार शर्मा के नवगीतों में ग्राम्य संवेदना'
सुभाष जाटव, डॉ. (श्रीमती) ज्योति धनोतिया 23

» "मेवाड़ का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश : एक अनुशीलन"
श्रीमती भगवती जोशी 26

» स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास में कृष्णा सोबती की स्त्री दृष्टि
डॉ. पूनम शर्मा 28

» रवीन्द्र कालिया के कथा लेखन में नव्य प्रयोग का परिप्रेक्ष्य
कुलदीप कुमार सोनी, डॉ. मधुसूदन मिश्र 30

» बदलते हुए ग्रामीण जीवन-मूल्यों के कथाकार - फणीश्वर नाथ 'रेणु'
डॉ. तीर्थनाथ मिश्र 33

» मारिशस का हिन्दी उपन्यास : कवि की दृष्टि से
डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा 36

» संत कवि रविदास का भक्ति-दर्शन
डॉ. कैलाश नाथ मिश्र 38

» जौनपुर जनपद की प्रमुख बोली 'अवधी' का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
सुधाकर बिन्द 41

» प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी पात्र विविध परिदृश्य
पूजा वर्मा 44

» 'सर्वेश्वर' का काव्य और प्रतिरोध के स्वर
डॉ. रमेश यादव 47

» देवताओं में इन्द्र
डॉ. दीपशिखा 50

» आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता का परिप्रेक्ष्य
डॉ. ब्रिजेन्दर सिंह, राहुल राय 53

» हिंदी कहानियों में अभिव्यक्त नारी लेखिका नमिता सिंह की दृष्टि से
प्रा. डॉ. शोभा यशवंते 55

» आदिवासी लोकगीतों में नारी का स्थान
डॉ. यास्मीन अख्तर सिद्दकी 57

» विदेशों में भारतीय लोक संस्कृति को जीवंत रखने में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका
मीतू चतुर्वेदी परमार 60

» दलितोत्थान पर महात्मा गांधी के विचार एवं योगदान
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मीणा 62

» हिन्दी साहित्य में नारी का स्वरूप
डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा 65

» मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी का स्वरूप
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार 68

» कवि केदारनाथ सिंह की दृष्टि में भिखारी ठाकुर ('भिखारी ठाकुर' कविता का विश्लेषण)
पंचदेव प्रसाद 70

» मन्नु भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में उनके जीवन संघर्ष के विविध पड़ाव
उर्मिला कुमारी 73

» जनपद लखीमपुर खीरी (उ. प्र.) में गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवारों के उत्थान हेतु नियोजन
विकास सिंह 76

» कौशल उन्नयन और आर्थिक सशक्तिकरण उद्यमिता विकास केन्द्र (सेडमेप) उज्जैन जिले के संदर्भ में
डॉ. राजकुमार नीमा, माखनलाल धानुक 81

» प्राचीन भारत में दिग्विजय का अवलोकन
डॉ. अनिल कुमार यादव 84

» माइंडस्पार्क संचालित एवं गैर संचालित विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययन
संजू त्रिपाठी, डॉ. बी. एल. श्रीमाली 86

» सामाजिक शिक्षा में भित्तिचित्र विज्ञापन मिडिया की भूमिका
डॉ. आशिष गंगाधर उजवणे 90

» नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक चेतना
रंजू यादव, डॉ. संजय कुमार सुमन 94

» आदिवासी महिलाओं पर शिक्षा का प्रभाव
डॉ. यास्मीन अख्तर सिद्दकी 96

» महाकवि भास के नाटकों में करूण रस विषयक चिंतन
डॉ. मुदिता श्रीवास्तव, राज कुमार प्रजापित 98

» जिला दक्षिण-पश्चिम, नजफगढ़, नई दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में चल रही स्वास्थ्य सम्बन्धी योजना का अध्ययन
डॉ. प्रवीण कुलश्रेष्ठ 103

» समावेशी शिक्षा के संदर्भ में नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता
डॉ. मंदिरा गुप्ता 106

द्वीय मासिक शोध पत्रिका
N 2349-7521, Impact Factor - 6.375
ol - XIX, Issue - I, November - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

'बसंत कुमार शर्मा के नवगीतों में ग्राम्य संवेदना'

सुभाष जाटव
डॉ. (श्रीमती) ज्योति धनोतिया

1. शोधार्थी,शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल, म. प्र.
2. शोध निर्देशक एवं सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल, म. प्र.

जब से मानव भाषा का जानकार हुआ है, भारतीय मानस में 'गीत' तब से गाए जा रहे हैं। समय, काल, परिस्थिति के अनुरूप गीत की शैली परिवर्तनशील रही है। समयानुसार हिन्दी साहित्य में कई विधाएं पूर्णत: क्षरित हो गई हों पर गीतों ने हर काल परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित कर लिया, जिससे वर्तमान तक गीत एक प्रासंगिक विधा बनी हुई है।

अमरकोश के अनुसार
'गीत और गान समानार्थक हैं।
गीत, गान निमे समे।'[1]

महादेवी वर्मा के अनुसार 'सुख दुख की भावावेशमयी अवस्था विशेष का गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है।'[2] गीत के नामकरण की उत्पति शब्दकल्पद्रुम में उपस्थित शब्द गीत से मानी गई है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'गान' होता है। हिंदी के अधिकतम विद्वानों के मतानुसार वह पद या छंद जिसे गाया जा सके गीत कहलाता है। अर्थात हम यह कह सकते हैं कि गायी जा सकने वाली आवरित छंदबद्ध रचना गीत होती है। यूं गीत मे गायन सहज रूप से उपस्थित रहता है।

जैसा कि सार्वभौमिक सत्य है परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है समयानुरूप ब्रह्मांड में अवस्थित प्रत्येक वस्तु, साहित्य, मनुष्य, प्राणी आदि में आमूलचूल परिवर्तन होता ही रहा है, और जैसा कि हमें ज्ञात है, गीत परंपरा भारतीय मानवीय इतिहास में पुरातन काल से चली आ रही है। स्वाभाविक रूप से गीत भी कुछ उप विधाओं में बंट गया है। जिनमें गीत की आत्मा रची-बसी रहती है। परंतु आवरण में यथा नाम परिवर्तन हो जाता है। यह कहा जाए कि कुछ नई विधाओं का भी नए समय में जन्म हुआ है जिनमें गीत के लक्षण पाए जाते हैं। आधुनिक काल में विशेषकर भारतीय स्वातंत्र्योत्तर काल में गीत के एक अलग रूप का आविर्भाव हुआ है जिसे नवगीत कहा जाता है।

नवगीत जैसा कि नाम से ही परिभाषा का आंकलन किया जा सकता है वह गीत जो अपने अंतस में नवता (नयापन) समावेशित किए हुए हो नवगीत कहलाता है। 'महेंद्र भटनागर के नवगीत: दृष्टि और सृष्टि' की भूमिका में देवेंद्र शर्मा नवगीत की परिभाषा कुछ इस प्रकार देते हैं 'वह रचना जो बहिरंग स्ट्रक्चर के स्तर पर भले ही गीत न हो किंतु वस्तुगत भूमि पर नवोन्मेषमयी हो उसे नवगीतात्मक ही कहना संगत होगा।'[3]

गीत में नवता का संचार एकाएक नही हुआ। वह नवगीत की ओर धीरे धीरे अग्रेषित हुआ। ऐसा कहा जा सकता है कि नवगीत में गीतों के विषयों से इतर विषय, देश की स्वतंत्रता के पश्चात लिखना प्रारंभ हुए। नवगीत में सामाजिक यथार्थ का निरूपण, नगरीय एवं महानगरीय परिवेश का चित्रण, व्यवस्था का विरोध, बौद्धिकता की प्रधानता, ग्रामीण एवं आंचलिक चित्रण, प्रेम एवं श्रृंगार की अभिव्यक्ति, राष्ट्रीय चेतना का चित्रण इत्यादि विषय/लक्षण धीरे धीरे समावेशित होकर मुखर हो गए। शनै: शनै: नवगीत विधा हिंदी साहित्य में अपनी पैठ व अलग पहचान बनाती गई जिसे वर्तमान समय के नवगीतकारों के द्वारा निरंतर चलायमान रखा गया है। आधुनिक युग का प्रतियोगी समय जब सभी विचारों को शिथिल किए देता है तब नवगीत अपने विचारों को सभी के समक्ष व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है। ग्रामीण एवं आंचलिक चित्रण के विषय पर कई गीतकार अपनी लेखनी चला रहे हैं जिसे हम और गहन अध्ययन करने पर ग्रामीण संवेदना का नाम भी दे सकते हैं। ग्राम्य संवेदना जिसमें ग्रामीण जीवन, गतिविधियां, रीति-रिवाज, अभावों की टीस इत्यादि समावेशित हैं। वर्तमान मै रविंद्र भ्रमर, जगदीश पंकज, यतींद्र नाथ 'राही', नरेश मेहता, रमेश रजक, बसंत कुमार शर्मा ऐसे ही नवगीतकार है जिनके नवगीतों में ग्राम्य संवेदना दिखाई पड़ती है इस शोध पत्र के मुख्य बिंदु श्री बसंत कुमार शर्मा जी ऐसे नवगीतकार हैं जो ग्राम्य संवेदना के मुखर हस्ताक्षर है बसंत कुमार शर्मा जो कि मूलत: राजस्थान के ग्रामीण अंचल से आते है वर्तमान में जबलपुर जैसे शहरी अंचल में रहकर ग्रामीण संवेदनाओं को अपनी कलम से उकेर रहे हैं। उनकी प्रथम नवगीत संगति जैसा कि वह अपनी नवगीत की किताब 'बुधिया लेता टोह' में बताते हैं आचार्य संजीव वर्मा सलिल एवं डॉ राम गरीब पांडेय 'विकल' के साथ हुई। जिसे उन्होंने उत्कृष्ट नवगीत लिखकर भुनाया भी है।

मनुष्य कितना भी आधुनिक क्यों न हो जाए पर अपने शहरी मानस के किसी कोने में गांव के प्रति आकर्षण संवेदना अवश्य रखता है। उसमें भी वह व्यक्ति जो अपना बचपन गांव की मिट्टी में जीकर प्रौढ़ावस्था में नगरीय सभ्यता का अंग बन जाता है और गांव छोड़ने का महीन दुख उस जीवन भर आंशिक रूप से व्यथित करता रहता है।

बैला खेत झोपड़ी गिरवी, पर खाली पॉकेट
छोड़ा गांव आज बुधिया ने, बिस्तर लिया समेट।'

भारत ग्राम एवं कृषि प्रधान देश होने के बाद भी आजादी के पचहत्तर वर्षों में अभी तक गांव से पलायन रोक पाने में असमर्थ होता हुआ दिखाई देता है। नित्य-प्रति लाखों लोग अपने ग्रामीण आजीविका के साधनों को औने-पौने दामों में बेचकर शहर की ओर पलायन करते हुए दिखाई देते हैं। बसंत कुमार शर्मा जी के नवगीतों का ग्रामीण मुख्य पात्र बुधिया उक्त पंक्तियों में वर्तमान के सारे ग्रामीण परिवारों के मुखिया के सामने खड़ी समस्याओं का चित्रण कर रहा है।

खेतों को सड़कें,
रहे जंगल
गया पानी झरनों का,
कैसे होगा मंगल?"

वर्तमान में दैहिक सुविधाओं और कृत्रिम विकास के लिए मानव ने अपनी आंखों पर काली पट्टी बांध ली है जिसके आर-पार उसे कोई और रंग दिखाई नहीं दे सकता और यह वर्णांधता मानव ने जानबूझकर पहन रखी है। देश में अन्न उपजाने वाले खेत नित्य प्रतिदिन किसी सड़क के नीचे दुर्घटना में मारे जाते है जिनका लहू नग्न नयनों से कोई नही देख पाता। जिस प्रकार फौजी के परिवार को उसके बलिदान के बदले कुछ राशि देकर उसकी जान की क्षतिपूर्ति कर दी जाती है उसी प्रकार खेतों को सड़कों से रौंदकर क्षतिपूर्ति दे दी जाती है और बेचारा ग्रामीण किसान मन मसोसकर रह जाता है। गाँवों के खेतों के साथ-साथ बसंत जी अपनी रचनाओं में पर्यावरण के प्रति सजग दिखाई देते हैं उनकी रचनाओं में झरनों, नदियों, प्राकृतिक स्रोतों के प्रति उनका मन द्रवित दिखाई देता है।

'पछुआ हवा शहर से चलकर,
गाँवों तक आई
देख सड़क को पगडंडी ने,
ली है अंगड़ाई।"

शर्मा जी के नवगीत सामान्य ग्रामीण शब्दों के साथ-साथ वैज्ञानिक शब्दों एवं भावों से लबरेज हैं जिनके द्वारा ग्रामीण परिवेश में जीते ग्रामीणों की सजीवता उन्होंने प्रस्तुत की है। पछुआ हवा जिसका गेहूं की पकती हुई फसल के समय गांव की तरफ आना शुभ संकेत माना जाता है। किसान इस समय अपने गेहूं चने की कटाई करने में बहुत फुर्ती दिखाते है, जिससे गांव की पगडंडियों से होते हुए वाहन शहर की तरफ ज्यादा आवागमन करने लगते हैं। संवेदनशीलता के साथ-साथ ग्रामीण गतिविधियों का वर्णन बसंत कुमार शर्मा जी के नवगीतों में यदा-कदा दिखाई देता है।

'बुधिया के हुक्के की गुडगुड,
कहे कथा न्यारी
कौन समझ पाया है उसकी,
क्या है बीमारी
सूखी हुई पसुरियां दिखती,
नर कंकाली वेश।"

गांव के लगभग हर घर में न्यूनतम एक बुजुर्ग खटिया पकडे मिल जाता है, जो अपने साथ भौगोलिक परिस्थिति अनुसार व्यसन के साधनों से समय काटता दिखाई देता है। बसंत कुमार शर्मा जी चूँकि राजस्थान से आते है और राजस्थानी गाँवों में लगभग सारे बुजुर्ग हुक्के का सेवन करते है। वे बुजुर्ग अपनी क्षरित अवस्था वाली देह के अंदर कई बीमारी लिए बैठे होते हैं, लेकिन उतनी ही तत्परता से वे अपनी बीमारियां छुपाने में माहिर भी होते हैं उनकी सूखी पसलियां और दैहिक अवस्था सारी चीजें साफ-साफ बताती है लेकिन बूढ़े-पुराने लोग अपने घर में अंत तक मुखिया वाला भाव रखते हैं। यही मुखियत्व वाला भाव बनाये रखने के लिए अपनी दैहिक अवस्था और अन्दर की बीमारी सबसे छुपा लेते हैं। और तिस पर यह विडंबना कि उनके अन्दर पल रही बीमारी को कोई पढ़ नही पाता या कई बार परिजनों द्वारा इन संवेदनशील परिस्थियों को जानबूझकर अनदेखा भी कर दिया जाता है। अपने नवगीत 'फुदके कहाँ गिलहरी' में गाँवों की उपेक्षा को इंगित करते हुए शर्मा जी लिखते हैं-

'गांव ढूंढते ठौर ठिकाना देश रहा शहरी
चहक नहीं अब गौरैया की क्रंदन पड़े सुनाई
तोता मैना बुलबुल कागा सबकी शामत आई
लुप्त हो रहे पीपल बरगद फुदके कहां गिलहरी।"

शहरों के प्रति आसक्ति ने पूरे देश को गाँवों की उपेक्षा करना बहुत ही सरल तरीके से सिखा दिया है। जहां चिड़िया एवं अन्य पक्षियों की संगीतमय आवाजें सुनकर मानव सुबह शाम आह्लादित हुआ करता था वहां एक अजीब सा मौन रुदन सुनाई देता है, जिसे यातायात के वाहनों ने और वीभत्स रूप दे दिया है जहां पेड़ों पर सभी प्रजातियों के पक्षी निवास करते थे, आज वहां उनके पदचिन्ह भी ढूंढे नहीं मिलते। पेड़-पौधे गांव के परिवेश का मुख्य रीढ़ हुआ करते हैं और जब पेड़ पौधे ही नहीं होंगे तब पक्षी एवं अन्य जानवर कहां से उनके आसपास निवास करेंगे। ग्रामीण परिवेश पूर्णता शहरी हो चले हैं, इतने शहरी के एक अदनी सी गिलहरी को अठखेलियां करने हेतु पीपल, बरगद के पेड़ तक नसीब नहीं होते। इसी प्रकार शर्मा जी नवगीत 'बहुतई अधिक विकास हो गया' में लिखते हैं-

'भूल गए पहचान गांव की
बसे नगर में जब से आकर
नहीं अलाव प्रेम के जलते,
गायब है चौपाल यहां पर।"

गांव का बिछोह इतना मर्मस्पर्शी है कि नगर में बसा हुआ नागरिक अपने पुराने गांव को याद करके मन ही मन रुदन भी कर रहा है और शहरी भेड़ चाल में ग्रामीण प्रतीकों को बिसराने के लिए उसे विवश कर दिया गया है। आपसी प्रेम-भाईचारे के लिए किसी के पास शहर में समय तक नही है। गांव की तरह एक साथ चौपालों पर बैठकर आपसी समस्याएं बातों से बाँटना और उनका हल निकालना तो दूर की कौड़ी प्रतीत होती है।

'गोबर से घर लिपा, पुती है गेरू कलई से दीवारें,
मुन्ना मुन्नी के हाथों में थमी हुई लकड़ी की कारें।"[10]

यह पंक्तियां बताती है कि ग्रामीण घरों में कैसे त्योहारों के समय साज सज्जा की जाती है कैसे लिपाई, पुताई, रंगाई का कार्य ग्रामीण परिवार की महिलाएं करती हैं गांव का बचपन कैसे अभावों में भी प्रसन्न रहता है, बच्चे मिट्टी और लकड़ी के खिलौने बनाकर आपस में खेलते हैं। त्यौहारों के समय का यह चित्रण मन को आह्लादित करने वाला होता है।

हमेशा एक पक्ष की बुराई और दूसरे पक्ष की बढ़ाई करते रहना भी लेखक कवि की विशेषता नहीं अपितु कमियों को प्रदर्शित करता है शर्मा जी यह बात भली-भांति जानते हैं वह अपने नवगीत 'जिंदगी की रेलगाड़ी' में गांवों एवं शहरों दोनों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनके मध्य सकारात्मक सामंजस्य स्थापित कर कैसे अपने जीवन को आगे बढ़ाना है, यह बताते हैं

'गांव का सौंदर्य बाँचा,
चमक नगरों की पढ़ी
पुल सुरंगों से गुजर कर
मार्ग पर अपने बढ़ी।"[11]

ग्रामीण परिवेशों से आगे बढ़कर शहरी वातावरण को आत्मसात करते हुए कोई व्यक्ति कैसे अपना आदर्श जीवन जी सकता है इसमें न तो गांव को कम महत्व दिया जाए और ना ही नगरीय सभ्यता का अधिक

महिमामंडन किया जाए। दोनों में बराबर सामंजस्य स्थापित किया जाना ही कवि का मर्म है।

बसंत जी ग्रामों की उपेक्षा और शहरों के महिमामंडन से व्यथित होकर पर्यावरण चिंतन भी समानांतर रूप से लिखते हैं

'गर्म होती जा रही है,
शहर में पागल हवाएं
क्या पता इन बस्तियों में,
कब पटाखे फूट जाएं।'[12]

यहां प्राकृतिक चिंतन लिखते हुए वे वातावरण में बढ़ती हुई गर्मी और शहरी रहन-सहन में पाश्चात्य अंधानुकरण को इंगित करते हैं शहरी बस्तियों की सघनता को देख कर कोई भी अनुमान लगा सकता है कि वे एक ज्वलनशील बारूद पर बसी हुई हैं। और न जाने कब यह बारूद इन बस्तियों को राख में परिवर्तित कर सकता है।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि बसंत कुमार शर्मा भारतीय ग्रामीण परिवेश एवं संवेदना के उपयुक्त चित्रकार हैं और ये चित्र वे अपने नवगीतों के माध्यम से जब तब उकेरते रहते हैं, ग्राम्य संवेदना यूं तो बहुत नवगीतकारों का मुख्य विषय रहा है, परंतु बसंत कुमार जी अपने नवगीतों में इस विषय के आंतरिक चित्र भी सरल रूप से प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार बसंत जी का वर्तमान नवगीतकारों में एक विशिष्ट स्थान अपने आप ही बन जाता है। वे ग्रामीण अंचल में लुप्त होती जा रही ग्रामीण संवेदनाएं, आंतरिक अभाव और शहरों के प्रति अंधानुकरण करते हुए विवश ग्रामीण मानस का चित्रण करते हैं। उनके नवगीतों का मुख्य पात्र 'बुधिया' हर उस अभावग्रस्त ग्रामीण घर का मुखिया है, जो वर्तमान में गांव में अभावों की पोटली लिए निवास कर रहा है, परन्तु प्रसन्न चित्त है। हमें आशा है कि बसंत कुमार शर्मा जी ऐसे ही अपने नवगीतों में ग्राम्य संवेदनाओं को अंकित करते रहेंगे।

सन्दर्भ सूची:-

1. हिन्दी साहित्य कोष भाग 1, पृ. क्र. 286
2. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, पृ. क्र. 118
3. देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र', महेंद्र भटनागर के नवगीत, पृ. क्र. 4
4). बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, 2019, पृ. क्र. 37
5. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 37
6. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 41
7. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 43,44
8). बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 49
9. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 53
10. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 61
11. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र. 55
12. बसंत कुमार शर्मा, बुधिया लेता टोह, भोपाल, काव्या पब्लिकेशन, पृ. क्र.71

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No. - MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Cosmos Impact Factor - 6.780
July to September 2022, E-Journal, Vol. I, Issue XXXIX

ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन का तुलनात्मक अध्ययन

दिलीप कुमार कुशवाह* डॉ. पुष्पलता चौकसे**

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहगढ़ (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य) शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना - ऑनलाइन विपणन से आशय ऐसे विपणन से है जिसमें उपभोक्ता इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल से कभी भी और कहीं से भी 24 घंटे खरीदारी कर सकते हैं। आधुनिक युग में व्यस्त जीवन शैली, अत्यधिक ट्रैफिक और ईंधन के लगातार बढ़ते दामों के कारण ऑनलाइन विपणन काफी तेजी से प्रगति कर रहा है। विक्रय की पूर्व निर्धारित एवं निश्चित शर्तें, माल वापसी की गारंटी, ऑनलाइन भुगतान सुविधा सुपुर्दगी पर भुगतान की सुविधा, सामान वापसी की स्पष्ट नीति आदि सुविधाओं की वजह से ऑनलाइन विपणन काफी लोकप्रिय हो गया है।

शोध का औचित्य- ऑनलाइन एवं ऑफलाइन विपणन के लाभ एवं सीमाओं के बारे में अध्ययन करना।

ऑनलाइन विपणन के लाभ - ऑनलाइन विपणन में उपभोक्ताओं कई प्रकार की सुविधा उपलब्ध होती हैं। इसलिये ऑनलाइन विपणन बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। ऑनलाइन विपणन के प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं:

1. समय की बचत।
2. श्रम की बचत।
3. ईंधन की बचत।
4. निश्चित एवं पूर्व निर्धारित विक्रय शर्तें।
5. ऑनलाइन भुगतान एवं सुपुर्दगी पर भुगतान की सुविधा।
6. विक्रय वापसी की सुविधा।
7. उत्पाद का प्रदर्शन एवं विवरण।
8. मानक साइज के उत्पादों के लिये उपयुक्त।
9. कतिपय उत्पादों के लिये उपयुक्त।
10. सरकार को उचित कर की प्राप्ति।

समय की बचत - ऑनलाइन विपणन में उपभोक्ता घर बैठे, कार्यस्थल से अथवा कहीं से भी इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल या कंप्यूटर की सहायता से खरीददारी कर सकता है। ऑफलाइन विपणन की तरह बाजार जाकर वस्तुओं को नही खरीदना पड़ता परिणामस्वरूप उपभोक्ता के समय की बचत होती है।

श्रम की बचत - ऑनलाइन विपणन में कहीं से भी मोबाइल या कंप्यूटर द्वारा इंटरनेट के माध्यम से खरीददारी की जा सकती है। अत: उपभोक्ता के श्रम की बचत होती है।

ईंधन की बचत - ऑनलाइन विपणन में उपभोक्ता को बाजार नही जाना पड़ता परिणामस्वरूप बाजार आने-जाने में लगने वाले अनावश्यक ईंधन की बचत होती है।

निश्चित एवं पूर्व निर्धारित विक्रय शर्तें - ऑनलाइन विपणन में सामान्यतया विक्रय की निश्चित एवं पूर्व निर्धारित विक्रय शर्तें होती है। अत: उपभोक्ता को ठगे जाने का भय नही रहता।

ऑनलाइन भुगतान एवं सुपुर्दगी पर भुगतान की सुविधा - ऑनलाइन विपणन में अधिकतर भुगतान ऑनलाइन होते हैं एवं उपभोक्ता को सुपुर्दगी पर भुगतान की सुविधा भी दी जाती है।

विक्रय वापसी की सुविधा - ऑनलाइन विपणन में अधिकतर कम्पनीज ग्राहक को माल पसंद न आने पर माल वापसी की सुविधा भी देती हैं।

उत्पाद का प्रदर्शन एवं विवरण - ऑनलाइन विपणन में उत्पाद का ऑनलाइन लिया जाता है एवं उससे संबंधित पूर्ण विवरण भी उपलब्ध करवाया जाता है।

मानक साइज के उत्पादों के लिये उपयुक्त - ऑनलाइन विपणन मानक साइज के उत्पादों जैसे-गार्मेंट्स, फुटवियर, इलेक्ट्रॉनिक आयटम के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है।

कतिपय उत्पादों के लिये उपयुक्त - कतिपय उत्पादों जैसे महिलाओं के अंडर गार्मेंट्स के लिये ऑनलाइन विपणन उपयुक्त है। भारत में कई बार महिलायें संकोच वश अपनी पसंद को ठीक प्रकार से प्रकट नहीं कर पातीं। ऐसी स्थिति में उनके लिये ऑनलाइन विपणन एक उचित माध्यम है।

सरकार को उचित कर की प्राप्ति - ऑनलाइन विपणन में प्रत्येक व्यवहार (Transaction) का लेखा होता है। वस्तुओं पर विभिन्न दर से कर लगाया जाता है। चूँकि सारे व्यवहार लिखित होते हैं उनका रिकॉर्ड रखा जाता है। अत: सरकार को उचित कर की प्राप्ति होती है।

ऑनलाइन विपणन की सीमाएं - ये सही है कि ऑनलाइन विपणन तेजी से प्रगति कर रहा है। फिर भी ऑनलाइन विपणन की कुछ सीमाएं भी हैं। जो अग्रलिखित हैं -

1. उत्पाद को छूकर देखने की सुविधा नहीं।
2. मोल-भाव का अभाव।
3. विक्रेता और उपभोक्ता के परस्पर संबंधों का अभाव।
4. कतिपय उत्पादों के लिये ही उपयुक्त।
5. छोटे खुदरा व्यापारियों के लिये चुनौतीपूर्ण।

उत्पाद को छूकर देखने की सुविधा नही - ऑनलाइन विपणन में उपभोक्ता वस्तुओं को केवल स्क्रीन पर देख सकता है। वस्तु को छूकर उसकी गुणवत्ता का पता नही लगा सकता।

मोल-भाव का अभाव - ऑनलाइन विपणन में विक्रय की शर्तें निश्चित एवं पूर्व निर्धारित होती हैं इसलिये उपभोक्ता को मोल-भाव करने की सुविधा नहीं होती।

विक्रेता और उपभोक्ता के परस्पर संबंधों का अभाव - ऑनलाइन

विपणन में विक्रेता और उपभोक्ता के बीच भौतिक सम्पर्क नहीं हो पाता। जिससे विक्रेता और उपभोक्ता के बीच परस्पर सम्बंध का अभाव रहता है।

कतिपय उत्पादों के लिये ही उपयुक्त - यदपि ऑनलाइन विपणन तेजी से विकसित हो रहा है लेकिन आज भी ऑनलाइन विपणन कतिपय उत्पादों के लिये ही उपयुक्त है।

छोटे खुदरा व्यापारियों के लिये चुनौतीपूर्ण - तेजी से विकसित ऑनलाइन विपणन ने छोटे खुदरा व्यापारियों के लिये बड़ी चुनौती है। अपने सीमित संसाधनों के कारण वे बड़ी ऑनलाइन कंपनीज से प्रतियोगिता नहीं कर पाते।

ऑफलाइन विपणन - ऑफलाइन विपणन में उपभोक्ता एवं विक्रेता के बीच प्रत्यक्ष संबंध होता है। इसके अंतर्गत उपभोक्ता व्यवसायिक परिसर में पहुंचकर, वस्तु के मूल्य, गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त होकर अपनी पसंद की वस्तु खरीदता है। ऑफलाइन विपणन में विक्रय की शर्तें, मूल्य, गारंटी विक्रेता और क्रेता के द्वारा विक्रय के दौरान तय की जाती हैं। भुगतान का तरीका विक्रेता और उपभोक्ता परस्पर बातचीत करते करते हैं।

ऑफलाइन विपणन के लाभ - ऑफलाइन विपणन या परम्परागत विपणन के मुख्य लाभ इस प्रकार हैं :

1. उत्पाद को स्पर्श कर के देखने की सुविधा।
2. परख कर देखने की सुविधा।
3. मोल-भाव की सुविधा।
4. विक्रय कला का उपयोग।
5. परिवार के साथ जाकर खरीददारी का आनन्द।
6. विक्रेता एवं उपभोक्ता के बीच मधुर संबंधों का लाभ।
7. उधारी की सुविधा।
8. उपभोक्ताओं को उपहार।

उत्पाद को स्पर्श करके देखने की सुविधा - ऑफलाइन विपणन में उपभोक्ता व्यवसायिक परिसर में जाकर वस्तुयें खरीदता है। वह वस्तुओं को छूकर देख सकता है और उसकी गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त हो सकता है।

परख कर देखने की सुविधा - ऑफलाइन विपणन में उपभोक्ता वस्तुओं को परख कर देख सकता है और सही माप के बारे में आश्वस्त हो सकता है।

मोल-भाव की सुविधा - ऑफलाइन विपणन में उपभोक्ता दुकानदार से वस्तु का मोल-भाव करके वस्तु खरीद सकता है। ऑनलाइन विपणन में यह सुविधा नही होती।

विक्रय कला का उपयोग - ऑफलाइन विपणन में विक्रय कला का महत्वपूर्ण स्थान है। ऑफलाइन विपणन विक्रेता की कला पर अत्यधिक निर्भर करता है। इस प्रकार ऑफलाइन विक्रय कला का उपयोग होता है।

परिवार के साथ जाकर खरीददारी का आनन्द - ऑफलाइन विपणन में बाजार, सुपरमार्केट एवं माल्स में परिवार सहित जाकर खरीददारी का आनन्द लिया जा सकता है। खरीददारी के साथ- साथ खाने का आनन्द भी लिया जा सकता है।

विक्रेता एवं उपभोक्ता के बीच मधुर संबंधों का लाभ -ऑफलाइन विपणन में उपभोक्ता व्यक्तिगत रुप से व्यवसायिक परिसर में पहुंचकर वस्तुओं को खरीदता है। परिणामस्वरुप विक्रेता और उपभोक्ता के बीच मधुर संबंध स्थापित हो जाते हैं। जिसका लाभ दोनों पक्षों को मिलता है।

उधारी की सुविधा - ऑफलाइन विपणन में बहुत से विक्रेता अपने नियमित ग्राहकों को उधारी की सुविधा देते हैं। ये सुविधा साधारणतया ऑनलाइन विपणन में नही पाई जाती।

उपभोक्ताओं को उपहार - ऑफलाइन विपणन में विक्रेता अपने नियमित उपभोक्ताओं को त्यौहारों के अवसर उपहार देते हैं। ये विशेषता ऑनलाइन विपणन में प्राय: नहीं पाई जाती।

ऑफलाइन विपणन की सीमाएं - ऑफलाइन विपणन के लाभों के साथ-साथ इसकी कुछ सीमाएं भी हैं जो अवालिखित हैं :

1. अधिक समय लगना।
2. अधिक श्रम लगना।
3. ईधन का अनावश्यक उपयोग।
4. विक्रय की शर्तों का पूर्व निर्धारित न होना।
5. मोल-भाव में उपभोक्ताओं को ठगे जाने का भय।
6. सरकार को राजस्व की हानि।

अधिक समय लगना - आजकल ज्यादातर बड़े शहरों में ट्रेफिक की समस्या आम बात है। ऑफलाइन विपणन में उपभोक्ता का बाजार जाने- आने में अत्यधिक समय लगता है।

अधिक श्रम लगना - ऑफलाइन विपणन में बाजार जाने और खरीददारी करने में अनावश्यक श्रम लगता है।

ईधन का अनावश्यक उपयोग - ऑफलाइन विपणन में समय और श्रम के साथ ईधन का भी अनावश्यक उपयोग होता है।

विक्रय की शर्तों का पूर्व निर्धारित न होना - ऑफलाइन विपणन में विक्रय की शर्तें प्रायरू पूर्व निर्धारित नही होती। वे उपभोक्ता और विक्रेता के बीच परस्पर बातचीत से तय होती हैं। जिससे कई बार उपभोक्ता को ठगे जाने का डर रहता है।

मोल-भाव में उपभोक्ताओं को ठगे जाने का भय - ऑफलाइन विपणन में विक्रेता विक्रय कला में निपुण होते हैं। इसलिये मोल-भाव में उपभोक्ताओं के ठगे जाने का भय रहता है।

सरकार को राजस्व की हानि - ऑफलाइन विपणन में कई बार विक्रेता उपभोक्ता को पक्का बिल नही देते। जिससे बेचे गये माल पर कर नही चुकाया जाता। परिणामस्वरुप सरकार को राजस्व की हानि होती है।

उपसंहार - उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आज भी ऑफलाइन विपणन प्रासंगिक है। यद्यपि ऑनलाइन विपणन काफी तेजी से लोकप्रिय हो रहा है फिर भी ऑनलाइन विपणन कतिपय उत्पादों तक ही सीमित है। आज भी सुदूर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता ऑफलाइन खरीदारी करते हैं। जबकि शहरी क्षेत्रों में ऑनलाइन विपणन काफी लोकप्रिय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Andrews, R.L. and Currim, I.S. (2004) 'Behavioural differences between consumers attracted to shopping online versus traditional supermarkets: implications for enterprise design and marketing strategy', Int. J. Internet Marketing & Advertising, Vol.1,No.1,pp.38–61.
2. Andrianto Widjaja and Yosua Giovanni W (2018) Impact of Online to Offline (O2O) Commerce Service Quality and Brand Image on Customer Satisfaction and Repeat Purchase Intention, International Journal of Advanced Engineering, Management and Science (IJAEMS), Vol-4, Issue-3, pp.163-170
3. जैन, डॉ. एस.सी. (2013) 'उपभोक्ता व्यवहार', विपणन के सिद्धांत कोड 2515, साहित्य भवन पब्लीकेशन आगरा, पेज नं. 27-50